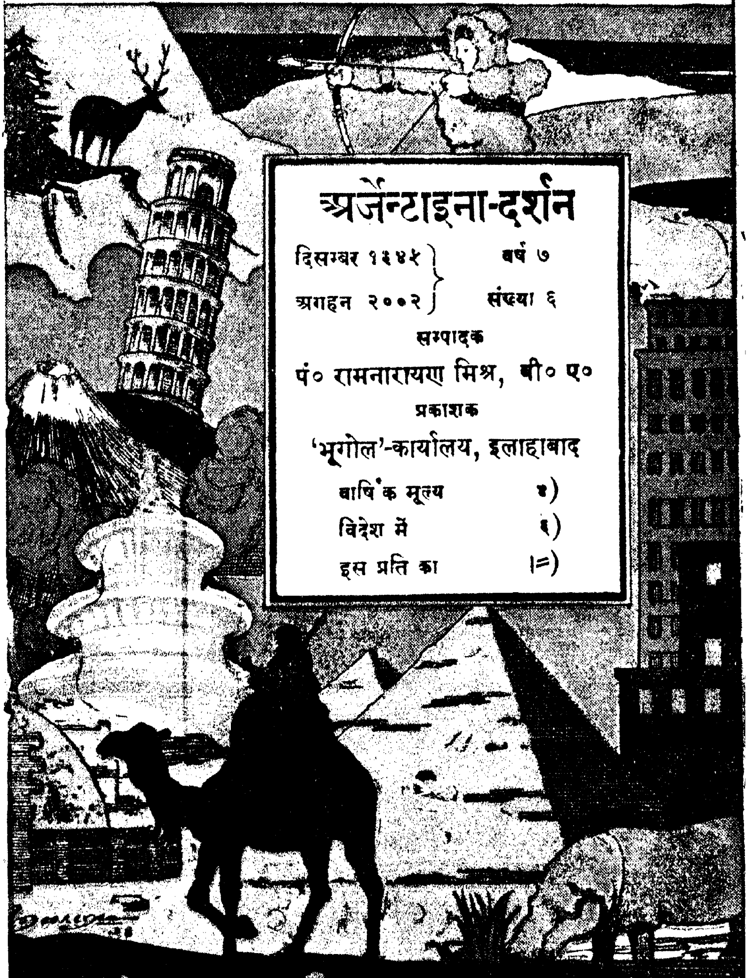
देश दर्शन

पूर्ण संख्या—७३



अर्जेन्टाइना-दर्शन

दिसम्बर १९४५ } वर्ष ७
अगहन २००२ } संख्या ६

सम्पादक
पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक
'भूगोल'-कार्यालय, इलाहाबाद

वार्षिक मूल्य ४)
विदेश में ६)
इस प्रति का ।=)

भूगोल कार्यालय — प्रयाग

विषय-सूची

स्थिति

स्थिति सीमा, तथा विस्तार

अर्जेंण्टाइना का प्रजातन्त्र राष्ट्र दक्षिणी अमरीका के दक्षिणी सिरे पर स्थित है। इसका आकार एक लम्बे त्रिभुज के समान है। इस त्रिभुज का सिरा दक्षिण की ओर है। जहां प्रशान्त महासागर और अटलांटिक महासागर मिलते हैं। अर्जेण्टाइना की अधिकतर सीमा प्राकृतिक है और पिल्को (मेयो) परना और यूरूग्वे नदियों द्वारा बनती है। चिली और अर्जेण्टाइना के बीच में एण्डीज पर्वत श्रेणी है। इसके उत्तर में बोलिविया, पेरेग्वे और ब्रेजील के प्रजातन्त्र हैं। इसके उत्तर-पूर्व में यूरूग्वे और पश्चिम में चिली देश है। रिओडेला, प्लाटा (नदी) के मुहाने से टेराडेल फ्यूगो द्वीप के दक्षिणी सिरे तक अर्जेण्टाइना का समुद्र-तट १६०० मील लम्बा है। इस ओर सब कहीं अटलांटिक महासागर है। इस विशाल देश की उत्तर से दक्षिण तक लम्बाई २०७० मील है। इसकी अधिक से अधिक चौड़ाई ८६० मील है। इसका क्षेत्रफल १२,००,००० वर्ग मील है जो अपने संयुक्त प्रान्त का दस गुना और भारतवर्ष का प्रायः $\frac{२}{३}$ है। क्षेत्रफल की दृष्टि से दक्षिणी अमरीका में अर्जेण्टाइना का दूसरा स्थान है। पर इसकी जन संख्या सवा करोड़ है जो अपने संयुक्त

प्रान्त की १/४ हैं। इस विशाल देश में १४ प्रान्त और १० प्रदेश (टरीटरी) हैं। योरुप वालों ने १५१७ ई० में पहले पहल इस देश का पता लगाया। इसके २० वर्ष बाद यह स्पेन के राज्य में मिला लिया गया। बहुत समय तक यहां स्पेन का राज्य रहा। फिर यह प्रजातन्त्र राज्य हो गया।

भूरचना

एण्डीज़ पर्वत श्रेणी (जो दक्षिणी अमरीका में उत्तर से दक्षिण को चली गई है) चिली और अर्जेण्टाइना के बीच में प्राकृतिक सीमा बनाती है। यह सीमा ऊँची चोटियों की मानी जाती है। इस पर्वत श्रेणी के पूर्वी ढाल का पानी अटलांटिक महासागर में और पश्चिमी ढाल का पानी प्रशान्त महासागर में पहुँचता है। उत्तर की ओर एण्डीज पर्वत श्रेणी पूर्व में इतनी चौड़ी हो गई है कि यह यहां अर्जेण्टाइना के एक तिहाई भाग को घेरे हुये है। अधिक दक्षिण की ओर इस श्रेणी की चौड़ाई बहुत कम रह गई है। अटलांटिक के आगे एण्डीज की तलहटी और अटलांटिक महासागर के बीच में अर्जेण्टाइना का शेष भाग मैदान है। यह मैदान समुद्र तट से पवत की ओर ऊँचा होता गया है।

अर्जेन्टाइना-दर्शन

अर्जेण्टाइना के मैदान का उत्तरी भाग ग्रेनचाको कहलात: है। इसके कुछ भाग में जंगल और कुछ भाग में दलदल है। मध्यवर्ती भाग में उपजाऊ पम्पाज़ प्रदेश है। यहां वृक्षों का अभाव है इसके अधिकतर भाग में घास है। शेष भाग में अच्छी खेती होती है। रियोनीग्रो (नदी) के दक्षिण में पेटेगोनिया का ठंडा खुश्क स्टेपी प्रदेश है। बोलिविया की सीमा के पास से रियोनीग्रो तक देश की प्रायः आधी लम्बाई में एण्डीज़ का पर्वतीय प्रदेश है। पूर्व की ओर यह पर्वत समस्त देश की चौड़ाई का कहीं $\frac{1}{4}$ और कहीं $\frac{1}{3}$ भाग घेरे हुये है। कहीं कार्डीलेरा पर्वत है। कहीं पठार है। कहीं जटिल पहाड़ियां हैं। उत्तर की ओर ऊँचे पठार और घाटियों का प्रदेश अर्द्ध रेगिस्तान है। इसमें प्रायः नमक की तहें मिलती हैं। चिली की सीमा के पास ऊँचा रेगिस्तान है। यहां पर्वतों से निकल कर कोई नदी नहीं बहती है। इसे पूमाडी एटकामा कहते हैं। कार्डोबा के प्रान्त में छोटी छोटी पहाड़ियां एण्डीज़ से भी अधिक पुरानी हैं। कार्डोबा सियरा के उत्तर में एक नमकीन आखात है जो समुद्र-तल से ६४३ फुट ऊँचा है। यह सेलीनास ग्रांडीज (विशाल नमकीन प्रदेश) कहलाता है। उत्तर-पूर्व की ओर मारचिकिटा (छोटा समुद्र) है। यहीं वे

दलदल है जिनमें (रियोसेलाडिलो नदी) का पानी समाप्त हो जाता है। रियोनीग्रो के उत्तर में एण्डीज़ की सर्वोच्च चोटियां हैं। एकान्केगुआ चोटी २३०८० फुट ऊँची है जो न केवल अर्जेण्टाइना वरन् दक्षिणी अमरीका में सबसे ऊँची चोटी है।

पेटेगोगोनिया के एण्डीज़ पर्वत रियोनीग्रो के अक्षांश से दक्षिणी सिरे तक चले गये हैं। यह बहुत कम ऊँचे हैं। दक्षिण की ओर इनकी ऊँचाई कम होती जाती है। इनकी अधिक से अधिक ऊँचाई ११९५५ फुट है।

अर्जेण्टाइना का ग्रेनचाको प्रदेश उत्तरी सीमा के पास पिल्कोमेयो से लेकर दक्षिण में रियो सालमडोडेल नार्टी तक चला गया है। इसका उत्तरी भाग उष्ण कटिबन्ध का बन है। चाको प्रदेश की भूमि पम्पाज़ के समान ही प्रायः समतल है। इसका क्रमशः ढाल दक्षिण-पूर्व की ओर है और एक मील में ८ या १० इंच से अधिक नहीं है। समुद्र-तल से चाको प्रदेश की औसत ऊँचाई ४५० फुट है। पश्चिमी सीमा के पास एण्डीज की घाटियों से कई धारायें बहुत ही टेढ़ी चाल से बहती हैं। इनमें छोटी छोटी नदियां ग्रीष्म ऋतु में बहुत सूख जाती हैं। केवल बड़ी बड़ी तेज बहने वाली नदियां पेरेग्वे नदी तक पहुँचकर उसमें सदा पानी गिराती रहती हैं। दक्षिणी सीमा पर

अर्जेन्टाइना-दर्शन

बहने वाली सलादो, बर्मेजो और पिल्कोमेयो नदियां अपना पानी पेरेग्वे में सदा गिराती रहती हैं। इसके कुछ भाग में ऊँची घास लहलहाती है। इसके ऊपर ताड़ के पेड़ खड़े हैं। यह ताड़का वन हज़ारों मील तक फैला हुआ है। कहीं-कहीं छोटी घास और झाड़ियां हैं। अधिकतर भाग में छोटे छोटे पेड़ हैं। इनके बीच बीच में विशाल वृक्ष हैं। वन के सिरे पर दलदल के किनारे पर हिरणों के झुन्ड मिलते हैं। पिकेरी जड़ों की खोज में भूमि खोदते रहते हैं। यहीं दक्षिणी अमरीका का शुतुर्मुर्ग प्राय: मिलता रहता है। तोते बहुत हैं। खुटबढ़ई पेड़ों में खुटखुट करके कीड़े निकाल कर खाते रहते हैं। यहां बड़े विषैले सांप हैं। इनके अतिरिक्त यहां और कई प्रकार की चिड़ियां हैं। इस प्रदेश के प्रधान निवासी रेड इण्डियन हैं। यहां योरुपीय लोग बहुत कम हैं। रेडइण्डियन बहुत पिछड़े हुये हैं। वे पांच से अधिक गिनती नहीं गिन सकते हैं। वे टहनियों का ढांचा बनाकर घास से छा लेते हैं। यही इनका घर है। वे मछली मार कर और शिकार करके अपना निर्वाह करते हैं। टोबा और मटाको इनकी प्रधान जातियां हैं। टोबा लोग बड़े लड़ाका होते हैं। इनके समीप अर्जेण्टाइना के गोरे लोगों ने कई सैनिक अड्डे बनाये हैं। यह लोग लकड़ी के भालों और धनुष बाण का प्रयोग करते हैं।

इनके बाण बांस के बने होते हैं। वे अपने प्रबल धनुष से बाण इतने जोर से छोड़ते हैं कि इससे वे एक इंच मोटे तख्ते को वेंध देते हैं। मनुष्य या जागुआर (चीते) को इन बाणों से वेधना इनके लिये खेल है। धनुष की प्रत्यंचा (डोरी) पहले शुतुर्मुर्ग की अतड़ियों से बनाई जाती थी अब चमड़े से बनने लगी है। यह अपने शत्रु की खोपड़ी को साफ करके उससे पानी पीने के प्याले का काम लेते हैं। वे तोते और शुतुमुर्ग के परों से अपने शरीर को ढक लेते हैं। अब कुछ लोग मक्का गन्ना, केला और सेम उगाने लगे हैं। कुछ लोग रेलवे में मजदूरी करने के लिये चले जाते हैं। क्वेब्राची की मजबूत लकड़ी यहां बहुत होती है। क्वेब्राचो का बन सेंटाफी से परना नदी के पास तक चला गया है। मध्य में सबाना के पास बहुत अधिक पेड़ हैं। पहले यह लकड़ी रेलवे सलीपर और खम्भों के काम में ही आती थी। आजकल यह और कई कामों के लिये उपयोगी सिद्ध हुई है। इससे वह बाहर भेज दी जाती है। इस लकड़ी के कारबार के लिये फोस्टाल कम्पिनी सबसे अधिक प्रसिद्ध है। इस कम्पिनी के पास २० लाख एकड़ भूमि है। १८० मील इसकी निजी रेलवे है। इसके पास सत निकालने के बड़े कारखाने, आरा चलाने की कई मिलें कई नावें नदी के

घाट और २६००० बैल हैं। इस कम्पिनी में ८ हजार से ऊपर मनुष्य काम करते हैं।

उत्तरी चाको का दूसरा उपयोगी पेड़ अल्गासेबो है। इससे इमारती लकड़ी बनती है। इसकी लकड़ी सड़क बनाने के लिये बड़ी अच्छी रहती हैं। इसकी फली जानवर बड़े चाव से खाते हैं। फली से शराब भी बनाई जाती है। जब अल्गारोबो फलता है और रेड इण्डियन शराब बनाने लगते हैं तो वे सब काम छोड़ कर नाच कूद में लग जाते हैं।

चाको प्रदेश का पानी पीने के लिये प्रायः अनुकूल है। केवल कुछ भागों में ऐसा नमकीन पानी है कि वह पीने योग्य नहीं है। इन जिलों में काराग्वाटा नाम का एक पौधा होता है। जिसकी पत्तियों में प्याले से बन गये हैं। इनमें मीठा पानी रहता है। अधिकांश चाको में वन और दलदल है। फिर भी बीच बीच के कई भागों में अच्छे चरागाह हैं। कई भागों में मक्का बहुत होती है। तम्बाकू भी अच्छी होती है। इस प्रदेश की भूमि में पत्थर का एक भी टुकड़ा नहीं मिलता है। एण्डीज़ की ओर से आकर यहां बड़ी बारीक मिट्टी बिछ गई है। कहीं सीमेंट के समान इस बारीक मिट्टी की तह बिछ गई है। इससे जो पानी इस तह तक पहुँच गया है वह और अधिक भीतर

नहीं भिद पाता है। इसी से बाढ़ का पानी भी बहुत दूर तक फैल जाता है। यह पानी धूप में सूखने पर ही दूर हो पाता है। नीचे भिदने को इसे मार्ग नहीं मिलता है। कभी कभी बाढ़ के समय में भूमि एकदम छिप जाती है। केवल वृक्षों की चोटियां दिखाई देती रहती हैं।

बन्दर जङ्गली सुअर, चींटी खोर भालू, विशाल लोमड़ी बन बिलाव, हिरण, टापीर, पूमा जागुआर (एक प्रकार का चीता) यहां के पशु हैं। नदियों में घड़ियाल और तरह तरह की मछलियां हैं। एक प्रकार की मछली वर्षा होने पर प्रगट होती है। पहले लोग समझते थे कि यह मेंह के साथ ऊपर से गिरती थी। पर वास्तव में यह खुश्क ऋतु में भूमि के नीचे सोती रहती है। पानी के आगमन से यह ऊपर प्रगट हो जाती है। यहां कई प्रकार के विशाल और विषैले सांप पाये जाते हैं। ग्रेन चाको की ऊँचाई समुद्र-तल से ६०० फुट से लेकर ८०० फुट तक है। पूर्व की ओर ढाल इतना क्रमशः है कि नदियों के मार्ग में प्रायः बालू की दीवार बन जाती है।

अर्जेण्टाइना का मध्यवर्ती प्रदेश पम्पाज़ कहलाता है। यह सबसे अधिक उपजाऊ और घना बसा हुआ है। यह प्रदेश ग्रनचाको से लेकर रियोनीग्रो तक (१० अक्षांशों में) फैला

हुआ है। यह वृक्ष रहित घास से ढका हुआ समतल मैदान है। यहां पहाड़ियों का नाम नहीं है। यह अटलांटिक तट से भीतर की ओर क्रमशः ऊँचा होता गया है। ब्यूनाजायर्स के पास इसकी ऊँचाई समुद्र-तल से केवल ६५ फुट है। ४०० मील पश्चिम की ओर इसकी ऊँचाई १२५० फुट है। इस प्रकार एक मील में ३ फुट के अनुपात से यह ऊँचा होता गया है।

नदियाँ

पेरेग्वे, परना और यूरुग्वे नदियां अपनी सहायक नदियों के साथ उत्तरी अर्जेण्टाइना का जल बहा लाती हैं। अर्जेण्टाइना में इन नदियों की सम्मिलित लम्बाई २३३० मील है। १९९७ मील तक इनमें नावें चल सकती हैं। पेरेग्वे, परना और यूरुग्वे नदियां ब्रेजील के पठार से निकलती हैं और दक्षिण की ओर बहती हैं। इन तीनों में प्रत्येक नदी कुछ दूर तक अर्जेण्टाइना की सीमा बनाती है। पिल्कोमेयो पेरेग्वे की सबसे बड़ी सहायक नदी है। यह बोलिविया से निकलती है और ४०० मील तक अर्जेण्टाइना की उत्तरी-पूर्वी सीमा बनाती है। फिर यह पेरेग्वे नदी में मिल जाती है। सलादो डेल नार्टी एण्डीज़ पर्वत के ढालों से निकलती है। दक्षिण-पूर्व की ओर बहकर परना नदी

में मिल जाती है। बर्मेजो नदी उत्तरी सीमा के पास निकलती है और दक्षिण पूर्व की ओर बह कर परना नदी में मिल जाती है। परना और यूरुग्वे के बीच वाले द्वाबा में कई छोटी छोटी नदियां मिलती हैं।

रिओडेला प्लाटा एक विशाल एस्चुअरी है। यह एक बड़ी खाड़ी बनाती है। परना और यूरुग्वे के संगम के पास यह १०० मील लम्बी और २३ मील चौड़ी है। मांटीविडियो के पश्चिम में लाप्लाटा की अधिक से अधिक चौड़ाई ५६ मील है। लाप्लाटा के ही किनारे पर ब्यूनाजायर्स का बन्दरगाह बनाया गया है।

पम्पाज़ प्रदेश के मध्यवर्ती भाग (जिसमें ब्यूनाजायर्स-प्रान्त और प्लाटा प्रदेश भी शामिल है) में सदा बहने वाली नदियों का प्रायः अभाव है। इसके दक्षिणी और पूर्वी भाग में कई छोटी छोटी नदियां हैं जो प्लाटा एस्चुअरी और अटलांटिक महासागर में गिरती हैं। इनमें सलादो डेल सूर नदी ३६० मील लम्बी है। अर्जेण्टाइना की कई नदियां खारी हैं जैसा कि इनके सलादो (नमकीन) नाम से प्रगट होता है। पम्पाज़ प्रदेश के दक्षिणी किनारे पर कोलेरेडो और नीग्री नदियां बहती हैं। यह नदियां एण्डीज़ से अटलांटिक महासागर तक समस्त प्रजातन्त्र को पार करती हैं। कोलोरेडो और नीग्रो दोनों नदियों में नावें चलती हैं। नीग्रो नदी ४०० मील लम्बी है और प्लेट की

बड़ी सहायक नदियों में गिनी जाती है। बहुत बड़े भाग में इसका पानी सिंचाई के काम आता है।

पेटेगोनिया – प्रदेश में कई नदियां एंडीज की तलहटी से निकलकर प्रशान्त महासागर में गिरती हैं। इनमें रिओ (नदी) चूबूट सबसे बड़ी है। रिओचीको इसकी प्रसिद्ध सहायक है। पेटेगोनिया में एण्डीज की पहाड़ियों से घिरी हुई कई झीलें हैं। इनमें बरफ का पिघला हुआ पानी आता है। लागो (झील) वेडमा लागो ब्यूनाजायर्स, लागोअर्जेण्टाइना और लागो नाहेल ह्वावी अधिक प्रसिद्ध झीलें हैं। झील के ऊँचे नीचे बर्फीले प्रदेश का दृश्य बड़ा मनोहर है। अर्जेण्टाइना के दूसरे भागों की झीलें बहुत छोटी हैं (ब्यूनाजायर्स प्रान्त) की झीलें प्रायः खारी हैं। कार्डोबा की पहाड़ियों से थोजो नदी निकलती है। उसे आगे बढ़ने के लिये मार्ग नहीं मिलता है। उसकी घाटी इस प्रकार रुंध जाने से मारक्विटा नाम की झील बन गई है। इस प्रकार और कई खारी झीलें बनी हैं। समुद्र-तट और बन्दरगाह अटलांटिक महासागर की ओर अर्जेंण्टाइना का समुद्र-तट १६१० मील लम्बा है। पर अच्छे बन्दरगाहों की कमी है। ब्यूनाजायर्स और एन्सेनाडा (लाप्लाटा) दो बन्दरगाह समुद्री जहाजों के लिये प्रसिद्ध हैं। इन्हें यहां की राष्ट्रीय सर-

कार ने अधिक व्यय करके तयार करवाया है। अर्जेण्टाइना का सर्वोत्तम प्राकृतिक बन्दरगाह बाहिया ब्लांका है। यह ब्यूनाजायर्स शहर से ५३४ मील दक्षिण की ओर स्थित है। यहां अच्छी गहराई वाली खाड़ी समुद्र की ओर से सब द्वीपों से सुरक्षित है। यहां सैनिक जहाजी अड्डा है। इसे प्यर्टो बेल्मानो या प्यूर्टो मिलीटार कहते हैं। इस बन्दरगाह से कुछ मील की दूरी पर इन्जेनियरों ह्वाइट और प्यूर्टो गाल्वन बन्दरगाह हैं। पेटेगोनिया के तट पर कई छोटे छोटे बन्दरगाह हैं। यहां तटीय स्टीमर आया करते हैं। सैन एण्टोनियो (रिओनिग्रो पर) क्रोमोडोरो रिवाडाविया (मिट्टी के तेल का केन्द्र) और प्यूर्टो मेड्रिन हैं। सैण्टा क्रूज, सैन जूलियन, प्यूर्टो डेसियाडो दूसरे बन्दरगाह हैं। बीगिल चेनल पर टेराडेल फ्यूगो का बन्दरगाह उशुआइया है। ब्यूनाजायर्स बन्दरगाह प्लेट नदी के उस स्थान पर स्थित है जहां उनकी एस्चुअरी २४ मील चौड़ी है। न्यूयार्क के बाद नई दुनिया में व्यापारिक महत्व की दृष्टि से दूसरा स्थान ब्यूनाजायर्स का ही है। यहां छः मील तक जहाजों का सामान उतारने, चढ़ाने के लिये डाक या जहाजी घाट बने हुये हैं। बन्दरगाह चार (रियाच्वेलो, पोर्ट मेडेरो, न्यूपोर्ट और साउथ डाक) भागों में बटा है। बन्दरगाह के भिन्न-भिन्न भागों में सब मिलाकर ७५ मील रेलवे लाइन है। यह अन्न

रखने के पांच विशाल अन्नागार या एलीवेटर हैं इन में १६७००० टन अन्न रक्खा जा सकता है। यहां वर्ष भर में प्रायः ४००० जहाज आते हैं और प्रायः १ करोड़ टन सामान लादते हैं।

अर्जेण्टाइना में कई ऐसी नदियां हैं जिनमें जहाज चल सकते हैं। परना नदी के किनारे रोजेरियो बन्दरगाह ब्यूनाजायर्स से २६० मील भीतर की ओर है। पर यह देश भर में दूसरे नम्बर का व्यापारिक बन्दरगाह है। यहां परना और पेरेग्वे नदियों का समस्त व्यापार आता है। जो जहाज २१ फुट गहरे पानी में चल सकते हैं वे यहां तक आते हैं। परना नदी के किनारे सेण्टाफी का बन्दरगाह ब्यूनाजायर्स से ३६० मील भीतर की ओर है। पर यहां तक जहाज आ सकते हैं। नदी के किनारे पर बसे हुये छोटे छोटे बन्दरगाह कई हैं।



जलवायु

अर्जेण्टाइना का बहुत ही थोड़ा भाग मकर रेखा के उत्तर उष्ण कटिबन्ध में स्थित है। शेष बड़ा भाग शीतोष्ण कटिबन्ध में स्थित है। मध्यवर्ती पम्पा प्रदेश की जलवायु शीतोष्ण और स्वास्थ्यकर है। यहां पर्याप्त वर्षा और धूप होती है। दक्षिणी गोलार्द्ध में स्थित होने के कारण अर्जेण्टाइना में सब कहीं जनवरी सबसे गरम महीना रहता है। जून और जुलाई मास में सबसे अधिक जाड़ा पड़ता है। पम्पाप्रदेश में सब कहीं जलवायु प्रायः एक सी है कार्डोबा का औसत वार्षिक तापक्रम ६२° अंश फारेन हाइट है। जनवरी का औसत तापक्रम ७७ अंश और जून का औसत तापक्रम ५० अंश फारेन हाइट रहता है।

ब्यूनाजायर्स शहर का औसत वार्षिक तापक्रम ६१ अंश फारेन हाइट है। इसका जनवरी तापक्रम ७४ अंश और जुलाई तापक्रम ४९ अंश फारेन हाइट रहता है। इस प्रकार कार्डोबा और ब्यूनाजायर्स के तापक्रम में अधिक अन्तर नहीं है। पर दोनों की वर्षा में भारी भेद है। ब्यूनाजायर्स की वार्षिक वर्षा ३८ इंच है। यह वर्षा प्रायः साल भर होती है। कार्डोबा में केवल २८ इंच वर्षा होती है। कभी कभी पाला भी पड़ जाता है। ब्यूनाजायर्स के दक्षिण में पम्पाप्रदेश के दक्षिणी सिरे पर

बाहिया ब्लांका का औसत वार्षिक तापक्रम ६० अंश है। यहां सबसे गरम जनवरी मास का तापक्रम ७० अंश और सबसे अधिक ठंडा जुलाई मास का तापक्रम ४६ अंश फारेन हाइट रहता है। वर्ष भर में वर्षा २१ इंच होती है।

अर्जेएटाइना देश उत्तर से दक्षिण तक ३३ अक्षांशों में फैला हुआ है। इसके बहुत से भाग समुद्रतल से अधिक ऊँचे नहीं हैं। कुछ भाग पर्वतीय है। कुछ भाग समुद्र के पास हैं। कुछ भाग समुद्र के अधिक दूर हैं। ऊँचाई अक्षांश और समुद्र की समीपता में अन्तर होने से अर्जेएटाइना के भिन्न भिन्न भागों की जलवायु में बड़ा अन्तर है अर्जेएटाइना का उत्तरी भाग केवल १०० मील उष्ण कटिबन्ध के भीतर स्थित हैं। इसका क्षेत्रफल लगभग ३०७२० वर्ग मील है। इसका पूर्वी भाग नीचा है। इसमें ग्रेनचाको का निचला बन है। यहां का वार्षिक औसत तापक्रम ७३ अंश फारेन हाइट रहता है। यहां ६३ इंच वर्षा होती है। इसके पश्चिमी सिरे पर पूना का सूखा पठार है। यहां केवल २ इंच (सालभर में) वर्षा होती है। यहां का औसत वार्षिक तापक्रम ५७ अंश रहता है।

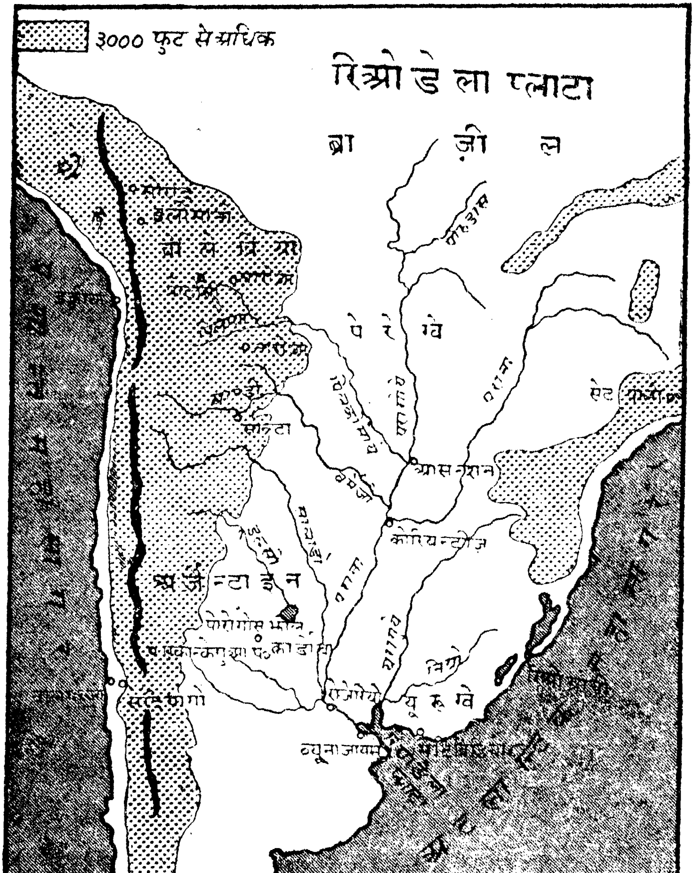
सैनलूई, क्वेटेमारका, लारिओजा, सैनहुआन, मेंडोजा, पश्चिमी कार्डोबा, दक्षिणी-पश्चिमी सेएिटयागो, डेलएस्टेरो प्रान्तों में भी बहुत कम वर्षा होती है। फसल उगाने के लिये

यहां खेतों को सींचना पड़ता है। पम्पाज की अपेक्षा इस ओर जलवायु अधिक गरम है। सेण्टियागो डेलएस्टेरो में तापक्रम कभी कभी ११८ अंश तक हो जाता है। मेसोपोटामिया या द्वाबा के तापक्रम में विशेष अन्तर नहीं पड़ता है। ग्रेनचाको में अर्जेण्टाइना भर में सबसे अधिक वर्षा होती है। टुकूमान में पानी खूब बरसता है। पर निचले भागों में गरमी बहुत होती है। साल्टा और सुजुई के कुछ भाग सूखे हैं। घाटियां गीली हैं। रियोनीग्रो के उत्तर में शीतकाल (मई से अगस्त तक) सब कहीं शुष्क रहता है। उत्तरी एण्डियन प्रदेश में भी एक ऋतु में वर्षा होती है। दूसरी ऋतु में सूखा रहता है। अर्जेण्टाइना के ठंडे भाग दक्षिण की ओर हैं। पर टेराडेल फ्यूगो द्वीप पर समुद्र का अधिक असर पड़ता है। इसलिये यह द्वीप इतना ठंडा नहीं है। जितने ऊपर की ओर भीतरी भाग ठंडे हैं यहां सेण्टाक्रूज का पश्चिमी भाग सबसे अधिक ठंडा है। यहां औसत से तापक्रम ३२ अंश फारेन हाइट रहता है। जिन उत्तरी अक्षाशों में लब्राडार के भाग हैं उन्हीं दक्षिणी अक्षांशों में पेटेगोनिया स्थित है पर यहां इतनी अधिक ठंड नहीं पड़ती है।

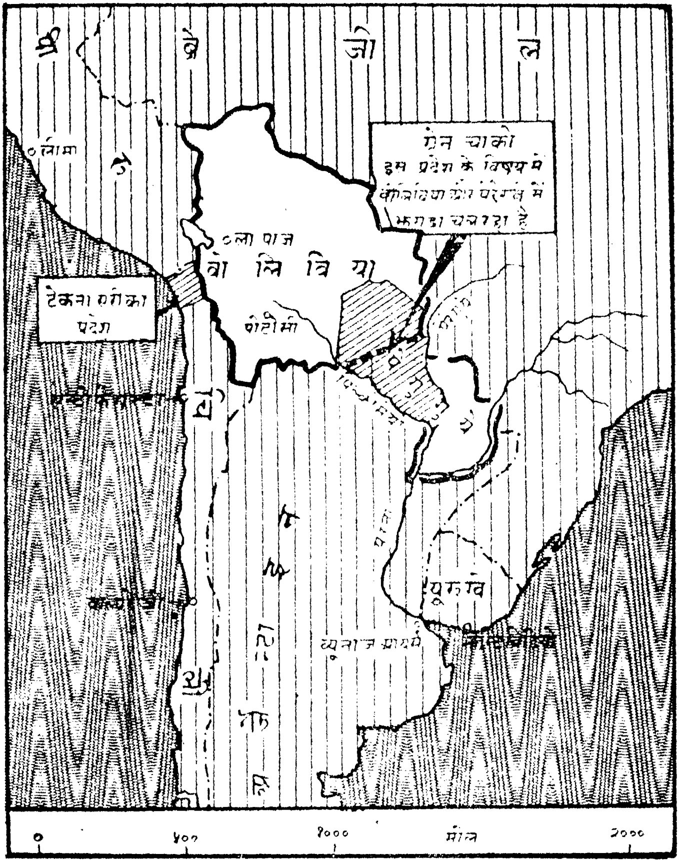
वनस्पति

जलवायु के अनुसार अर्जेंटाइना वनस्पति का विभाग है। उत्तर के उष्ण कटिबन्ध में उष्ण कटिबन्ध के वन हैं। इनमें ताड़ वृक्षों की प्रधानता है। बीच बीच में कड़ी लकड़ी वाले पेड़ हैं। इनके नीचे कई प्रकार की झाड़ियां और लतायें हैं। उत्तर-पश्चिम और पश्चिम की ओर वर्षा की कमी है। वहां ऊँचे खुश्क और नमकीन प्रदेश में मरुभूमि की वनस्पति हैं। यहां कम पत्ती वाली कांटेदार सूखी और नाटी झाड़ियाँ हैं।

पम्पा प्रदेश अधिकांश अर्जेण्टाइना को घेरे हुये है। यहां अपने आप उगे हुये वृक्षों का अभाव है। जहां कहीं मनुष्यों ने पेड़ लगाये हैं वहीं पेड़ हैं। इस प्रदेश की प्राकृतिक वनस्पति घास है। यहां घास दो प्रकार की होती है। पास्टोडूरो या कड़ी घास और पास्टोब्लांडो मुलायम घास सब कहीं मिलती है। पास्टोडूरो या कड़ी घास का जन्म स्थान यही है। मुलायम घास बाहर से बीज मँगाकर यहां लगाई गई है। पम्पा की भूमि बड़ी उपजाऊ है। वर्षा प्रायः सभी फसलों के लिये पर्याप्त हो जाती है। इसलिये जहां पहले कड़ी घास होती थी उसके स्थान पर मुलायम घास उगाई गई है। तरह तरह की फसलें भी उगाई जाती हैं।



३००० फुट से अधिक
रिओ डे ला प्लाटा
ब्रा ज़ी ल
पे रे ग्वे
आसनशान
कोरियन्टीज़
अर्जेन्टाइन
यू रु ग्वे
ब्यूनाजायस


ब्रे जी ल
लीमा
ग्रैन चाको
इस प्रदेश के विषय में
बोलिविया और पेरेग्वे में
झगड़ा चल रहा है
ला पाज
बोलिविया
टेकना एरीका
प्रदेश
पोटोसी
यूरुग्वे
ब्यूनास आयर्स
0
1000
मील
2000

देश दर्शन

पेटेगोनिया का अधिकतर भाग उजाड़ है। वहां वृक्ष नहीं होते हैं। एंडीज की तलहटी के समीप घाटियों में ही पेड़ मिलते हैं। वहां चरागाह और खेत हैं। पेटेगोनिया के स्टेपी प्रदेश में भेड़ों के लिये अच्छी घास हो जाती है। कुछ भागों में कांटेदार झाड़ियां हैं। टेराडेल फ्यूगों में अधिक वर्षा होती है। यहां बन और घास की अधिकता है। पेटेगोनिया में एण्डीज की पहाड़ियों और टेराडेल फ्यूगो में देवदारु, बांझ आदि के पेड़ होते हैं। अर्जेण्टाइना की २८९,००० वर्ग मील भूमि में बन है। इस बन में कुछ अच्छी लकड़ी के पेड़ हैं जिनसे घर और तरह तरह का सामान बनता है। कुछ पौधों से रंग तयार होता है। कुछ पेड़ों की छाल से चमड़ा कमाया जाता है।

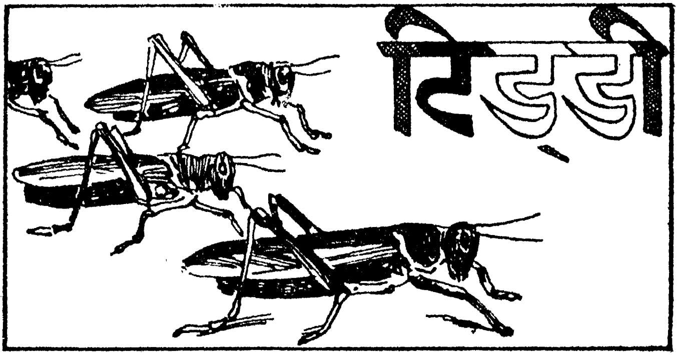


अर्जेन्टाइना-दर्शन

टिड्डी-दल

अर्जेण्टाइना वासी टिड्डी को हृदय से कोसते हैं। जितना वे सांप को भी बुरा नहीं समझते हैं। सांप कहीं कहीं मनुष्य को काटकर उसकी जान ही लेता है। फसल को हानि नहीं पहुँचाता है। टिड्डी दल अपने मार्ग की हरियाली को एकदम साफ करके किसान को अपार हानि पहुँचाता है। जब इसके आने का समय निकट आ जाता है तो कई दिन पहले से ही सब कहीं टिड्डी के सम्बन्ध में बातें होने लगती हैं। खेतों में होकर सेना के कूच करने से फसल को इतनी हानि नहीं होती है जितनी इन टिड्डी दलों से होती है। पर अर्जेण्टाइना बहुत बड़ा देश है। इसलिये यदि एक स्थानों में हज़ारों एकड़ फसल नष्ट हो जाती है, तो शेष अधिक बड़ा प्रदेश उससे बच जाता है। टिड्डियां उत्तरी भाग से आती हैं। वे अपने मार्ग से प्रथम स्थानों को बहुत कम हानि पहुँचाती हैं। जैसे डाकगाड़ी छोटी स्टेशन पर नहीं रुकती है वैसे ही टिड्डी दल भी आरम्भ के स्थानों को अछूता छोड़ कर आगे बढ़ आते हैं। जब कभी कुछ टिड्डियां उधर उतरती हैं। तब रेड इंडियन लोग इन्हें मार कर खा जाते हैं। टिड्डियां अधिकतर मध्यवर्ती प्रान्तों में आकर ठहरती

हैं। वे अधिक दक्षिण की ओर भी नहीं जाती हैं। बाहिया ब्लांका इनके क्षेत्र से बाहर है। जब टिड्डी दलों का बादल दक्षिण की ओर उड़ता है तो यह चलते हुये धुएँ के समान मालूम होता है। दूर तक आकाश धुंधला पड़ जाता है। मार्ग



के जिन वृक्षों पर लाखों टिड्डियां बैठती हैं उनकी शाखायें टूट पड़ती हैं। फिर भी इस अवसर पर अधिक हानि नहीं होती है। भूखी टिड्डियां अंडे देने में मस्त हो जाती हैं। वे वीरान जगह पर अंडा देती हैं। कच्ची सड़क उन्हें अधिक पसंद है। इनके बैठने से भूमि भूरी पड़ जाती है। ऐसे अवसर पर सड़क पर मोटर या गाड़ी चलाने वाले को बड़ा कष्ट होता है। रेलगाडी भी इनसे पूरी ढक जाती है। टिड्डियां को छोड़कर आगे

कुछ नहीं दिखाई देता है। यह दृश्य एक भूरे समुद्र के समान मालूम पड़ता है। जिसकी भूरी लहरें लगातार ऊँची उठ रही हों। घुड़सवार को ऐसा लगता है मानों यह लहरें घोड़े के खुर से लेकर ऊपर आकाश तक उछल रही हों।

अंडा देते समय टिड्डियां बहुत आगे नहीं बढ़ती हैं। अपनी पूंछ से एक इंच गहरा छेद करके वे उसी में आधी गड़ जाती हैं। इनका केवल सिर और कंधा ऊपर दिखाई देता है। पूँछ भीतर मिट्टी में जकड़ जाती है। यदि ऊपरी भाग पकड़ कर किसी टिड्डी को ऊपर खींचो तो ऊपरी भाग एकदम अलग हो जाता है। इसी भीतरी छेद में अंडे होते हैं। एक एक टिड्डी ८० से लेकर १२० तक अंडे देती हैं। अंडे कुछ पीले होते हैं पूरे दल के अंडे इतने अधिक होते हैं कि खोदने पर इनकी एक तह सी दिखाई देती है। अंडा देने वाली भूमि में आधी गड़ी हुई टिड्डियों को कुचलने के लिये किसान इन स्थानों पर अपने गाय, बैल और भेड़ों के झुंड इधर उधर हांकते रहते हैं। भेड़ों के तेज़ खुर कुचलने में अधिक सफल होते हैं।

अंडों से जो बच्चे निकलते हैं वे यहां साल्टोना कहलाते हैं। इनके पंख नहीं होते हैं। इस समय इनका रंग बड़ा सुहावना होता है। यह कूद कूद कर चलते हैं। यह अपने मार्ग की

फसलों और हरियाली को एक दम चट करते जाते हैं। इनको मारने के लिये इनाम दिया जाता है। बोरे के बोरे इनसे भर जाते हैं। इनके फँसाने के लिये इनके भाग में मीलों तक खाईं खोद दी जाती है। इनके ऊपर टीन की चद्दरें खड़ी कर दी जाती हैं। कुछ ही समय में खाईं भर दी जाती है। फिर इन्हें मिट्टी से दबा दिया जाता है। इनकी लाशों की दुर्गन्ध से मीलों तक हवा दूषित हो जाती है। जो मूर्गियां इन्हें खाती हैं। उनके अंडे बिगड़ जाते हैं। जो बच्चे अकाल मृत्यु से बच जाते हैं, उनके बड़े होने पर उनका रंग बदल जाता है और उनके पंख निकल आते हैं। ग्रीष्म काल के अंत में बची हुई टिड्डियां फिर अपने उत्तरी अड्डों को लौट जाती हैं। फलों के जिन बगीचों में टिड्डी दलों का आगमन होता है, उनके पेड़ों की पत्तियां साफ हो जाती हैं। फिर इन पेड़ों के फलने का कोई नियत समय नहीं रहता है। जिन पेड़ों की छाल भी टिड्डियां खा लेती हैं वे कुछ वर्षों तक फलना ही बन्द कर देते हैं।

अर्जेण्टाइना में मजदूरों की बड़ी कमी है। फिर भी टिड्डी दलों का दमन करने के लिये हजारों सरकारी कर्मचारी लगे हुये हैं। टिड्डी दलों के आने का समय निश्चित नहीं है। वे कुछ

(प्रायः ७) वर्षों तक लगातार आते हैं। फिर उतने ही वर्षों तक उनका आना प्रायः बन्द हो जाता है।

ऊन की कतराई

भेड़ों के पालने वाले प्रदेश के बीच में एक विशाल गालपोन या ऊन कतरने का बाड़ा होता है। जब भेड़ों के झुण्ड इधर आते हैं तो इनके आगमन की सूचना देने वाले धूल के बादल दूर से ही दिखाई देने लगते हैं। प्रत्येक झुण्ड के साथ भूरे चेहरे वाले गड़रिये अपने आप ही भेड़ों की देख भाल करते हैं। इनको सहायता देने वाले कुत्ते यहां नहीं होते हैं।

बाड़े में दोनों ओर पियन या मजदूरों की पंक्ति होती है। प्रत्येक मजदूर बड़ी तेजी से कैंची चलाता है। यहां पचासों मजदूर एक साथ काम करते हैं। फिर भी यहां किसी मनुष्य की आवाज़ नहीं सुनाई देती है। जो मनुष्य जितनी ऊन कतर लेता है उसी के अनुसार उसे मजदूरी मिलती है। इसलिये प्रत्येक मनुष्य अधिक से अधिक ऊन कतरने में लगा रहता है। उसे बात करने का अवकाश नहीं मिलता है। केवल कैंची के

चलने या भेड़ों के इधर उधर होने का शोर अवश्य होता है। पर जब भेड़ों से लदी हुई खुली छकड़ा गाड़ी आती है तो बाड़े का शोर दब सा जाता है। इस गाड़ी के लिये रेल की पटरियां बिछी रहती है। इसे दो मनुष्य खींचते हैं। गाड़ी बहुत नीची होती है। इसमें भेड़ें भरी होती हैं। भेड़ें इतनी सटी होती हैं कि वे इधर उधर हिल नहीं सकती हैं। प्रत्येक भेड़ के चारों पांव एक साथ बांध दिये जाते हैं। इन भेड़ों की दुहरी पंक्ति रहती हैं। इनके सिर गाड़ी के बाहर निकले रहते हैं। गाड़ी थोड़ी थोड़ी दूर पर रुकती जाती है। कभी दाहिनी और कभी बाईं ओर भेड़ ऊन कतरने वालों के पास उछाल कर फेंक दी जाती है। इससे उनका हाथ रुकने नहीं पाता है।

आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड में ऊन कतरने वाले बीच बीच में गाते और हँसते भी रहते हैं। पर अर्जेण्टाइना में ऊन कतरने के बाड़े में कैंचियों की लगातार आवाज़ के अतिरिक्त और कोई शब्द सुनाई नहीं देता है। यहां के काम करने वाले चुप रहना अधिक पसंद करते हैं। औसत से प्रत्येक कतरने वाला दिन भर में ६० भेड़ों की ऊन कतर लेता है। बाड़े के एक सिरे पर ऊन की कटाई होती है। यहीं मशीनों से ऊन के गट्ठे बना कर इकट्ठे किये जाते हैं। यहां सब कहीं ऊन की

गन्ध आती है। ग्वाले और मछुये सभी ऊन कतरने का काम करते हैं। एक एक बाड़े में प्रायः सौ सौ ऊन कतरने वाले होते हैं। यह लोग घोड़ों पर सवार होकर दूर दूर से आते हैं। इनके भोजन के लिये एक विशाल गढ़े में तेज़ आग जलती रहती है। इसके चारों ओर अधकटी भेड़ भुनने के लिये लटका दी जाती हैं। १०० मज़दूर यहां १४ दिन ठहरते हैं और इसी बीच में ६०० से अधिक भेड़ों को भून कर खा जाते हैं यहां के स्थायी मज़दूर भी एक भेड़ को दो दिन में चट कर जाते हैं। भेड़ की मांस और यरबा माटी (दक्षिणी अमरीका की चाय) इनका प्रधान भोजन और पेय है। जब तक ऊन कतरने वालों को ओढ़ने बिछाने के लिये गरम कम्बल और भोजन के लिये भेड़ का मांस मिलता रहता है तब तक वे और किसी चीज़ की चिन्ता नहीं करते हैं। जो कुछ वे यहां कमाते हैं उसे वे प्रायः जुये में हार कर चले जाते हैं। इस जुये में पुलिस का भी हाथ रहता है। वे रिश्यत लेकर उसे प्रोत्साहन देते रहते हैं।

देश दर्शन

ब्यूनाज़ायर्स

ब्यूनाज्ञायर्स अर्जेंएटाइना की राजधानी है। यह नगर दक्षिणी अमरीका में सबसे बड़ा नगर है। यह समुद्र तट से प्राय: १५० मील की दूरी पर एक निचले मैदान के सिरे पर लाप्लाटा नदी के पश्चिमी किनारे पर स्थित है। ब्यूनाज्ञायर्स शब्द का अर्थ सुन्दर पवन है। सचमुच यहां की हवा बड़ी अच्छी है। जून जुलाई और अगस्त महीनों में यहां अएटार्क्टिक महासागर की ओर से ठंडी हवायें आती हैं। पर बरफ़ बहुत ही कम गिरती है।

ब्यूनाज्ञायर्स संसार के बड़े बन्दरगाहों में से एक है। यहां मीलों तक जहाज़ी घाट या डाक बने हैं। यहां जहाज़ तरह तरह का सामान लादते और उतारते हैं। इंगलैंड का लद्दू (माल ढोने वाला) जहाज़ यहां लोहे और फ़ौलाद का सामान उतारता है। फ्रान्स का जहाज़ रेशम और शराब लाता है। अमरीकी जहाज़ मोटरकार, बिजली का सामान और खेती के औज़ार लाद कर लाता है। पेरेग्वे की नावें यहां नारंगियां केला और यर्बा माटी लाती हैं। बहुत से जहाज़ बड़ी पंक्ति में कोयला उतारते हैं। अर्जेंएटाइना में कोयले का अभाव है।

इसी से प्रतिवर्ष २० लाख टन कोयला बाहर से आता है। सब कहीं बड़े शक्ति शाली क्रेन जहाजों से सामान उतारते हैं। यही क्रेन जहाजों पर गेहूँ और मक्का के बोरे सफेद कनवस में लपटे हुये मांस के गट्टर, ऊन के बंडल, चमड़े के गट्ठे, मक्खन, पनीर और अर्जेंएटाइना की दूसरी उपज चढ़ाते रहते हैं।

डाक या जहाजी घाट के पड़ोस में ही रेलगाड़ियां माल को लगातार ढोती रहती हैं। इनके पड़ोस में सैकड़ों मोटर लारियां और घोड़ा गाड़ियां माल लाती हैं और दूसरा लाद कर ले जाती हैं। नदी के किनारे पर मांस को डब्बों में भरने के विशाल कारखाने हैं। यह मांस के कारखाने या कसाई घर संयुक्तराष्ट्र अमरीका के अधिकार में हैं। यहां प्रति दिन हजारों भेड़ें और गाय बैल कटने के लिये आते हैं। इनका मांस ठण्डे डब्बों में बन्द करके बाहर भेजा जाता है।

यहीं आटा पीसने की बड़ी बड़ी चक्कियां हैं। एलीवेटर (अन्नागार) हैं। अनाज रेलगाड़ियों में आता है और मशीनों द्वारा एलीवेटरों में भरा जाता है। जहाज इन एलीवेटरों के पास आकर लग जाते हैं इनसे यह अन्न सीधे जहाजों में भरा जाता है। इस प्रकार पांच छः हजार टन वाला जहाज छः सात घंटों में अन्न से भर जाता है।

देश दर्शन

बन्दरगाह से कुछ ही दूर मोटरों का अड्डा है। यदि हम एक मोटरकार किराये पर लेकर शहर के भीतर घुसें तो थोड़ी थोड़ी दूर पर हमको चौराहे मिलेंगे। इन चौराहों पर प्रायः पुलिस का सिपाही रहता है। भारतवर्ष की तरह यहां भी सब लोग अपनी बाईं ओर को ही मुड़ते हैं। सड़कें एक दूसरे से समकोण बनाती हुई जाती हैं। पुरानी सड़कें ऐसे समय में बनी थीं जब यहां पहिये वाली गाड़ियों का चलन न था। उस समय केवल दो घुड़सवार इधर उधर चले जावें इतनी ही चौड़ाई पर्याप्त थी। यह पुरानी सड़कें आजकल इतनी तंग पड़ती हैं। कि इनमें केवल एक ओर को ही गाड़ियां जाने पाती हैं। पचास ब्यूनाज़ायर्स में एक लाख से कम मनुष्य रहते थे आजकल यह दक्षिणी अमरीका का सब से बड़ा नगर हो गया है। यहां प्रायः १८ लाख मनुष्य रहते हैं जो प्रायः बम्बई के बराबर है।

ब्यूनाज़ायर्स की प्रधान सड़क एवीनीडा डी मेयो (मई की सड़क) है। इसी मई मास में स्वाधीनता का युद्ध आरम्भ हुआ था। यह सड़क १२० फुट चौड़ी है और एक मील से अधिक लम्बी है। इसके दोनों ओर पैदल चलने की पगडंडियां बनी हैं। दोनों ओर सुन्दर वृक्षों की पंक्तियां हैं। सड़क के दोनों ओर बढ़िया होटल बड़ी दुकानें और सरकारी दफ्तर है।

अर्जेन्टाइना-दर्शन

सड़क के एक सिरे पर यहां की धारा सभा (पार्ल्यामेंट) की इमारत है। देश के लिये क़ानून बनते हैं। दूसरे सिरे पर सरकार का विशाल भवन है। यहां सब से अधिक सुन्दर भवन पर पुरस्कार दिया जाता है। पुरस्कार निर्माण करने वाले को मिलता है। घर के स्वामी को कुछ वर्षों तक टैक्स नहीं देना पड़ता है। घर प्रायः सात आठ मंजिल ऊंचे हैं। यही ला प्रेन्सा समाचार पत्र का पांच मंजिला सफेद पत्थर का भवन है। इसके ऊपर बुद्ध ग्रह की मूर्ति पीतल की बनी है। स्पैनिश भाषा में ला प्रेन्सा संसार का विख्यात पत्र है। यह दक्षिणी अमरीका में सब से अधिक प्रसिद्ध है। यहां कुछ समाचार पत्र इटेलियन अंग्रेज़ी, फ्रांसीसी, डच, जर्मन और स्वेडिश भाषाओं में भी छपते हैं। ब्यूनाज़ायर्स में कई देशों के निवासी बसे हुये हैं। कहा जाता है जितने इटेलियन लोग इटली के जनोआ नगर में बसते हैं उससे कहीं अधिक ब्यूनाज़ायर्स नगर में बसे हुये हैं। इसी प्रकार जितने स्पेन वासी स्पेन की राजधानी मेडिड नगर में रहते हैं उससे अधिक ब्यूनाज़ायर्स में रहते हैं।

काल फलारिडा सड़क पर फैशन में बढ़ी चढ़ी दुकाने हैं। यह सड़क तंग हैं। यहां सायंकाल के समय मोल लेने वालों की इतनी भीड़ रहती है कि गाड़ियों का चलना बन्द हो जाता है। यहां की दुकाने न्यूयार्क या पेरिस की दुकानों से टक्कर ले

सकती है। टेट्रोकोलन या कोलम्बस थियेटर अपने सुन्दर संगीत के लिये प्रसिद्ध है। दक्षिणी अमरीका में यह सबसे बड़ा संगीत गृह है। यहां संसार के प्रसिद्ध कलाकार एकत्रित होते हैं। इसे सरकार की ओर से कुछ वार्षिक सहायता मिलती है।

अर्जेण्टाइना वासी घुड़दौड़ देखने के बड़े शौक़ीन होते हैं। राष्ट्रपति से लेकर साधारण मजदूर तक घुड़दौड़ देखने आते हैं। इसी से यहां के हिपोड्रोम (घुड़दौड़ के मैदान) में प्रत्येक सायंकाल को २०,००० दर्शक एकत्रित होते हैं। इसके पास ही पेलर्मो पार्क है। ब्यूनाजायर्स में यह सब से बड़ा और मनोहर पार्क है। इसमें चक्करदार सड़कें और कृत्रिम झीलें हैं। यहां सुन्दर पौधे और पेड़ हैं। अर्जेण्टाइना की स्वाधीनता युद्ध का नेता सैन मार्टिन था। उसी ने इस देश को स्पेन के साम्राज्य से मुक्त कराया था। ब्यूनाजायर्स के सिखल (विशाल गिरजा घर) में उसकी समाधि है।

ब्यूनाजायर्स में फल, अंडे, मांस, भाजी आदि के बड़े बड़े बाजार हैं। यहां वस्तुओं का भाव तय करना पड़ता है। यहां बड़ी भीड़ रहती है। इस लिये बहुत से लोग फेरी लगाने वालों से आवश्यक सामान खरीदते हैं। फेरी लगाने वाले बहंगी को कंधे पर लटका कर घर घर पर बेचने के लिये पहुँचते हैं। वे

चिल्ला कर बेचा करते हैं। सायंकाल गायें घर घर दुहने के लिये पहुँचती हैं। उनके घंटियां बंधी रहती हैं। घंटियों के बजने से ग्वाले के आगमन की सूचना मिल जाती है। घर वाली बाहर आकर अपने बर्तन में ताज़ा गरम दूध दुहा लेती है। गधी का दूध भी इसी तरह बिकता है। छोटे बच्चों के लिये गधी का दूध पसन्द किया जाता है।

ब्यूनाजायर्स की सड़कों पर मोटर, ट्रैम आदि गाड़ियों की भीड़ लन्दन या न्यूयार्क से कम नहीं होती है। इन मोटरों पर खड़े होने की आज्ञा नहीं है। कुछ सड़कें अभ्यन्तर (भूमि के भीतर) बनी हैं। ब्यूनाजायर्स से पांच सौ रेलगाड़ियां प्रति-दिन छूटा करती हैं यह रेल गाड़ियाँ मुसाफिरों को लेकर देश के भिन्न भिन्न भागों में पहुँचती हैं। समस्त अर्जेण्टाइना देश की ½ जन संख्या इस अकेले ब्यूनाजायर्स नगर में बसी हुई है। यहीं देश की इस राजधानी में शिक्षा संस्कृति, व्यापार और समृद्धि का केन्द्र है। इसी से इस नगर के विचारों का प्रभाव समूचे देश पर पड़ता है।

———

देश दर्शन

उत्तरी अर्जेण्टाइना की यात्रा

यह यात्रा मार्ग अर्जेण्टाइना के उस प्रदेश में होकर जाता है जहां गेहूँ बहुत पैदा होता है। रेलवे लाइन परना नदी की घाटी में बिछी हुई है। इस घाटी में उपजाऊ काली मिट्टी है जिसे परना नदी ने अपनी बाढ़ के साथ लाकर बिछाया है। इस बारीक मिट्टी की तहें ३ फुट से ६ फुट तक गहरी हैं। अगर यहां सावधानी से खेती की जावे तो यहां इतना गेहूँ पैदा हो कि इससे संसार के समस्त मनुष्यों का पेट भर जाया करे। केवल बड़े बड़े खेतों में जिन्हें एस्टेन्सिया कहते हैं नये ढंग से खेती होती है। साधारण खेत अधजुते रह जाते हैं। जुताई बैलों से होती है। जुआ सींगों से बांध दिया जाता है। खाद, शायद ही कभी दी जाती है।

बोने और फसल काटने के समय पूरा परिवार काम में लग जाता है। स्त्रियां और बच्चे भी पुरुषों की सहायता करते हैं इनका शेष समय आलस्य में बीत जाता है। गेहूँ को छोड़कर दूसरी फसलों का उगाना यह लोग नहीं जानते हैं। पर अर्जेण्टाइना की सरकार किसानों को खेती के नये ढंग सिखाने का प्रयत्न कर रही है।

ब्यूनाजायर्स से उत्तर की ओर बढ़ने में पहला बड़ा नगर

रोजेरिया पड़ता है। यह नदी का बन्दरगाह है और ब्यूना जायर्स से २०० मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। परना प्रवाह प्रदेश (बेसिन) में गेहूँ की सर्वोत्तम खेती का केन्द्र रोजेरियो है। नदी इतनी गहरी है कि समुद्री जहाज से रोजेरियो तक चले आते हैं। प्रतिवर्ष सैकड़ों जहाज गेहूँ और मांस लाद कर रोजेरियर से योरुप को जाते हैं। रोजेरियो नगर नदी के ५० फुट ऊंचे सपाट किनारे पर बसा है। इन किनारों पर असंख्य एली वेटर बने हुये हैं। एलीवेटरों से नदी के पानी तक लम्बे नल या चूट निकले हुये हैं। इन्हीं नलों से नीचे ठहरे हुये जहाजों में सीधे एक दम गेहूँ भरा जाता है। एक एक एलीवेटर में बीस बीस नल गेहूँ भरने को लगे रहते हैं। इससे कई जहाजों में एक साथ गेहूँ भरा जा सकता है। रोजेरियों में गेहूँ के कारबार के अतिरिक्त असंख्य कसाई घर, डब्बों में मांस भरने के कारखाने और पशुओं के विशाल बाड़े हैं। इसी से इसे प्रायः दक्षिणी अमरीका का शिला कहते हैं। यह दक्षिणी अमरीका के प्रमुख व्यापार केन्द्रों में से एक है।

रोजेरियो प्रायः २०० वर्ष से बसा हुआ है। पर अब से प्रायः ५० वर्ष पहले यह एक गांव था। इस बीच में यह बड़ी तेजी से बढ़ा। ब्यूनाजायर्स को छोड़ कर अर्जेण्टाइना के शेष

नगरों में यह सबसे बड़ा है। यह नगर बहुत ही खुला हुआ और सुन्दर बसा है। घर पुराने स्पेन के ढंक पर आंगन के चारो ओर बने होते हैं। वे प्राय: एक मंजिला होते हैं।

रोजेरियो के आगे हमारी रेलगाड़ी सेण्टा फी के विशाल और उपजाऊ प्रान्त को पार करती है। यहां की भूमि बड़ी उपजाऊ है। लेकिन इस प्रान्त और रिओ प्रान्त में टिड्डी दलों से बड़ी हानि होती है। वे अक्तूबर मास में आती हैं जब यहां बसन्त ऋतु होती है। वे अंगूरों की लताओं, के खेतों और फलों के बगीचों को एकदम चट कर जाती है। वे करोड़ों की संख्या में आती हैं। कभी कभी वे सूर्य की धूप को एक चलते हुये बादल के समान छिपा देती हैं। उनके एक दल की एक बार की चौड़ाई नौ मील थी। उसकी लम्बाई और अधिक थी।

सेण्टा फी से पश्चिम की ओर कार्डोबा का और भी अधिक बड़ा प्रान्त है। कार्डोबा नगर इस प्रान्त की राजधानी है। यह नगर अर्जेण्टाइना में सबसे अधिक पुराना है। यहां कुछ लोग अपने आप को पुराने स्पेन वासी अन्वेषकों के वंशज बतलाते हैं। यह नगर जंगल और पहाड़ियों के बीच में बहुत ही सुन्दर बसा है। चक्कर काटती हुई नदी इसके सामने है। यहां का विश्वविद्यालय दक्षिणी अमरीका भर में प्रसिद्ध है। यहाँ के

पढ़े हुये विद्यार्थी देश के प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ हुये हैं। देश के बीच में स्थित होने से यहां की वेधशाला का समय समस्त देश में प्रामाणिक माना जाता है। यहां की वेधशाला ने दक्षिणी गोलार्द्ध के नक्षत्रों का अच्छा अध्ययन किया है। यह नगर रेलों का भी केन्द्र है। यहां पांच रेलवे लाइनें आकर मिलती हैं। कार्डोबा नगर १५८३ ई० में बसाया गया था।

अधिक उत्तर की ओर बढ़ने पर कुछ खुश्क प्रदेश मिलता है। यहां प्रेरी घास पीली पड़ गई है। सरकंडे सूखे हैं। कांटे-दार झाड़ियां बहुत हैं। यहां के प्राचीन निवासी मिट्टी के छोटे छोटे कच्चे घर बनाते हैं। यह लोग प्राचीन इंका लोगों की सन्तान हैं। इनकी भाषा बोल विया के मूल निवासियों से मिलती है। इस प्रदेश में बड़े सुन्दर पक्षी मिलते हैं। एक पक्षी का शरीर हरा और सुनहरा धारीदार होता है। उसकी चोंच लाल होती है। एक भाग में चूल्हे वाली चिड़ियां रहती है। यह चूल्हे के आकार की गीली मिट्टी से अपना घोंसला बनाती है घोंसला तार के खम्भों पर बनाया जाता है।

खुश्क प्रदेश और नमकीन दलदलों को पार करने पर अर्जेण्टाइना का बगीचा आ जाता है यहीं टुकूमान का सुन्दर शहर बसा है। आकाश निर्मल रहने पर टुकूमान से एण्डीज

पर्वत और बोलिविया की हिमाच्छादित चोटियां दिखाई देती हैं। यह अर्जेण्टाइना का पुराना नगर है। यह सोलहवीं शताब्दी में बसाया गया। हाल में बढ़ते बढ़ते यहां की जन संख्या १ लाख से ऊपर होगई है। अर्जेण्टाइना वासियों को इसे नगर पर बड़ा अभिमान है। वे प्रायः नवान्तुकों से पूछा करते हैं क्या आपने टुकूमान नगर देखा है।

फसल कटने के समय यहां दूर दूर से मजदूर आया करते हैं। इस समय यहां ऊँची ईख का लहलहाता हुआ समुद्र सा दिखाई देता है। मजदूर प्रायः वर्णसंकर इण्डियन होते हैं। मजदूरी के अतिरिक्त उन्हें प्रति दिन २ गन्ने चूसने के लिये दिये जाते हैं। गन्ने खच्चर गाड़ियों पर लाद कर खेत से ढोये जाते हैं। एक एक गाड़ी में पांच पांच खच्चर जोते जाते हैं।

टुकूमान का स्वाधीनता गृह देखने योग्य है। आज कल यह एक आधुनिक विशाल भवन से घेर दिया गया है। इसी छोटे घर में १८१६ ई० में स्पेन ने स्वाधीनता सम्बन्धी सन्धि पर हस्ताक्षर किये थे। यहां प्रथम राष्ट्र पति की कुरसी रक्खी है। यहीं वह कमरा है जहां कांग्रेस की प्रथम बैठक हुई थी। अर्जेण्टाइना वासी इस स्थान को बड़ा पवित्र मानते हैं।

अर्जेन्टाइना-दर्शन

टुकूमान में शक्कर बनाने के विशाल कारखाने हैं। पहले एक बड़ी मशीन गन्नों से रस पेरती है। फिर यह रस लोहे के विशाल कड़ाहों में उबाला जाता है। गाढ़ होते होते इसकी शक्कर तय्यार हो जाती है। अन्त में यह सफेद कर ली जाती है। पर दक्षिणी अमरीका वाले भूरी शक्कर अधिक पसन्द करते हैं। टुकूमान में शक्कर बनाने के ६० से ऊपर कारखाने हैं।

उत्तर की ओर टुकूमान अर्जेण्टाइना का अन्तिम बड़ा नगर है। इसके आगे देश पहाड़ी है। आबादी कम है। जुजुई इसी नाम के प्रान्त की राजधानी है। यह छोटा नगर पहाड़ और जङ्गलों से घिरा हुआ है। अर्जेण्टाइना का यह नगर देश भर में सबसे अधिक उंचाई पर बसा है। उंचाई के कारण इसका दृश्य कुछ कुछ काश्मीर के दृश्य से मिलता है।

अटलांटिक तट से प्रशान्त तट की रेलयात्रा

जिस समय अर्जेण्टाइना ने ब्यूनाजायर्स से एण्डीज के ढालों तक ७०० मील लम्बी रेलवे लाइन का बनाना आरम्भ किया ठीक उसी समय चिली देश ने वालपरेजो से एण्डीज के ऊपर चढ़ने वाली पहाड़ी रेलवे लाइन को आरम्भ किया। कई

वर्षों तक दोनों लाइनें अलग रहीं। इन पर चलने वाली रेल-गाड़ियों का आपस में कोई सम्बन्ध न था। अन्त में एण्डीज की ठोस चट्टानों को काट कर २ मील लम्बी अद्भुत सुरंग बनाली गई। फिर प्रशान्त तट से आने वाली चिली की रेलवे अर्जेण्टाइना की रेलवे लाइन से मिला दी गई। आज कल ब्यूनाजायर्स से वालपरेजो की रेलयात्रा ४८ घंटे में समाप्त हो जाती है। अर्जेण्टाइना की प्रायः सभी रेलवे लाइनें ब्रिटिश कम्पिनियों ने बनाई है। इसलिये इनके डब्बे और इंजिन इङ्गलैंड के बने हैं।

ब्यूनाजायर्स छोड़ने के बाद हम पम्पाज के विशाल मैदान में प्रवेश करते हैं जो सैकड़ों मील पश्चिम की ओर फैला हुआ है। इस समतल मैदान में एस्टेंसिया बड़े खेत या चरागाह की इमारतें केवल कहीं कहीं इस प्रकार दिखाई देती है मानो अपार महा सागर में छोटे द्वीप हों। शेष कोई पहाड़ या टीले मैदान की समतल में विघ्न डालने के लिये कहीं दिखाई नहीं देते हैं। इस चपटे मैदान में वृक्षों का भी अभाव है। वृक्ष केवल एस्टेंसिया के घरों के समीप ही मिलते हैं जहां उनके मालिकों ने इन्हें लगाया है। यहां कहीं कहीं ताल और दलदल अवश्य मिलते हैं। यहीं सारस, बगुला, चील्ह, एमू और

काराञ्चो आदि अनेक पक्षी मिलते हैं। काराञ्चो पक्षी बाज के समान होता है। गड़रिये लोग इस पक्षी से बहुत डरते हैं और इसे घृणा की दृष्टि से देखते हैं। यह उनकी भेड़ों के छोटे बच्चों (मेंमनो) पर प्रायः आक्रमण करती रहती है।

रहे पक्षी सब से बड़ा और मनोहर होता है। यह दक्षिणी अमरीका का शुतुर्मुर्ग कहलाता है। पम्पाज और रेगिस्तानी भागों में यह अधिक संख्या में मिलता है। पम्पाज में बहुत से रहे पालतू हो गये हैं। चरागाहों के मालिक इनका वध नहीं होने देते हैं इस से रहे स्वतन्त्रता पूर्वक उनके चरागाहों में इधर उधर चरती रहती है।

धीरे धीरे चलते समय शुतुर्मुर्ग अपने पंखों को बन्द रखता है। दौड़ते समय वह उन्हें फैला लेता है। ऐसी दशा में तेज घोड़ा भी उसे नहीं पकड़ पाता है। रेगिस्तान में कभी कभी शुतुर्मुर्ग बालू में अपना सिर गाड़ लेती है। ऐसी दशा में दूर से यह झाड़ी के समान मालूम होती है और शिकारियों के पंजे से बच जाती है। कुछ लोग इसके इस स्वभाव को मूर्खता पूर्ण समझ बैठते हैं।

रहे (शुतुर्मुर्ग) झुंडों में विचरा करते हैं। मादा शुतुर्मुर्ग एक घोंसले में अंडा देती है। कभी कभी घोंसले में ५० अंडे

तक हो जाया करते हैं। नर शुतुर्मुर्ग अंडा सेता है और अंडों से जो बच्चे निकलते हैं उनकी देख भाल करता है। इस अवसर पर शुतुर्मुर्ग छेड़ने वाले पर आक्रमण कर देता है। छेड़े जाने पर वह कुत्ते और घुड़सवार मनुष्य पर भी झपट्टा मारने में नहीं हिचकिचाता है। वह इतने जोर से लात मारता है कि कुत्ता या मनुष्य इस चोट से मर जाता है।

दक्षिणी अमरीका का शुतुर्मुर्ग अफ्रीका के शुतुर्मुर्ग से छोटा होता है। दक्षिणी अमरीका के शुतुर्मुग के पर उतने मूल्यवान नहीं होते हैं। फिर भी यह इकट्ठे करके झाड़न बनाने के काम आते हैं। हाल में कुछ अफ्रीका के शुतुर्मुर्ग यहां मंगाकर पाल लिये गये हैं। पश्चिम की रेल यात्रा में मीलों तक लहलहाते हुये मक्का के खेत मिलते हैं। गेहूँ के खेत और भी अधिक बड़े हैं। कहीं कहीं नीले फूल वाले फलेक्स (अलसी) के खेत मिलते हैं। और अल्फा घास के खेत इतने अधिक विस्तार वाले हैं कि वे क्षितिज को छूते हुये मालूम पड़ते हैं। यहां गाय, बैल, भेड़ और घोड़ों के असंख्य झुंड चरते हैं।

गेहूँ के खेतों में संयुक्त राष्ट्र अमरीका की बनी हुई गाहने (माड़ने) की मशीन से काम लिया जाता है। यही मशीन अन्न को बोरों में भरती जाती है। इन से जो भूसा निकाला

जाता है वह प्रायः कई सौ फुट लम्बा और बहुत ऊँचा हो जाता है। भूसे के इस ढेर के सामने गाहने (भाड़ने) वाली बड़ी मशीनें भी छोटी मालूम होती हैं। गेहूँ के बोरों को स्टेशन पर पहुँचाने का काम बैलगाड़ियों से लिया जाता है। विशाल बैलगाड़ियों के पहिये ८ फुट ऊंचे होते हैं। इनकी धुरी में बहुत कम तेल लगाया जाता है। इस से इन में चेंह चेंह की आवाज़ होती रहती है। बैल हांकने वालों का विश्वास है कि इस तरह की आवाज़ से उन्हें बोझा खींचने में प्रोत्साहन मिलता है। स्टेशनों में यह बोरे गोदामों में भर दिये जाते हैं अथवा लाइन के किनारे पर लगा दिये जाते है। फिर वे मालगाड़ियों में लाद कर रोजेरियो अथवा ब्यूनाजायर्स को पहुँचा दिये जाते हैं। स्टेशन पर गेहूँ के टीले इतने बड़े हो जाते हैं कि वे पहाड़ से मालूम पड़ते हैं। गेहूँ की उपज में अर्जेण्टाइना का समस्त संसार में छठा स्थान है। पर संयुक्त राष्ट्र अमरीका को छोड़ कर यह देश सबसे अधिक गेहूँ बाहर भेजता है। फिर भी इस देश की लाखों एकड़ उपजाऊ काली मिट्टी अभी खेतों के काम में नहीं लाई जाती है। और अधिक गेहूँ पैदा करने के लिये इस देश को अधिक मजदूरों की आवश्यकता है।

देश दर्शन

मक्का की उपज में संसार में प्रथम स्थान संयुक्त राष्ट्र अमरीका का है और दूसरा स्थान अर्जेण्टाइना का है। पर संयुक्त राष्ट्र अमरीका के किसान अधिकतर मक्का सुअरों को खिला देते हैं और उनका मांस बाहर भेजते हैं। अर्जेण्टाइना के किसान अपना ८० फीसदी मक्का बाहर भेज देते हैं। यहां प्रतिवर्ष २० लाख बुशल मक्का पैदा होती है और १६ लाख बुशल बाहर भेज दी जाती है। गेहूँ और मक्का के अतिरिक्त अर्जेण्टाइना में अपार अलसी (फलेक्स) उगाई जाती है। पर यह अलसी रेशे या मलमल बनाने के लिये नहीं उगाई जाती। मलमल की अलसी (फलेक्स) पकने के पहले ही काट ली जाती है।

जो अलसी बीज के लिये उगाई जाती है वह पकने पर ही काटी जाती है। उसका रेशा व्यर्थ हो जाता है। पर उससे मूल्यवान बीज मिलता है। इसे पेर कर तेल निकालते हैं। यह तेल गीला रंग, बार्निश, छापने की स्याही और औषधि बनाने के काम आती है। यह अलसी अधिकतर संयुक्त राष्ट्र अमरीका को जाती है।

अर्जेण्टाइना गाय, बैलों के लिये संसार भर में प्रसिद्ध है। यहां सैकड़ों मील तक सुन्दर चरागाह फैले हुये हैं। पहले लम्बे

सींग वाले ढोर बहुत दुबले पतले थे। वे केवल हड्डी और चर्बी के लिये काटे जाते थे। उन दिनों बहुत से गाय बैल जंगली हो गईं। आगे चल कर इन गायों और बैलों को लोग मांस और चमड़े के लिये पालने लगे। मांस में नमक मिलाकर और धूप में सुखाकर रक्खा जाता था। फिर जब ठंडी कोठरियों में भर कर मांस को भेजने का ढंग चल निकला तो बहुत सा मांस बाहर भेजा जाने लगा। आजकल संसार में सब से अधिक गोमांस अर्जेएटाइना से बाहर भेजा जाता है। अर्जेएटाइना के किसानों ने ढोरों के चरने के लिये हज़ारों एकड़ भूमि में अल्फा घास लगाई है। भारतवर्ष की तरह अर्जेएटाइना की गाय साल भर बाहर चर सकती हैं। इससे थोड़े ही मनुष्य अधिक ढोरों की देखभाल करने के लिये पर्याप्त अर्जेंएटाइना में भेड़ें भी बहुत पाली जाती हैं। यदि समस्त अर्जेएटाइना की भेड़ें एक स्थान पर एक पंक्ति में इस प्रकार खड़ी की जावें कि २० भेड़ें एक दूसरे से सटकर खड़ी हों (अर्थात् पंक्ति की चौड़ाई एक साथ खड़ी हुई २० भेड़ों के बराबर हो) तो भेड़ों की यह चौड़ी और ठोस पंक्ति भारतवर्ष के आर पार कुमारी अन्तरीप से ख़ैबर दर्रे तक पहुँच जावेगी। अंग्रेज़ लोग भेड़ का मांस बहुत खाते हैं। उनके लिये अधिकतर मांस अर्जेएटाइना और आस्ट्रेलिया से आता है।

देश दर्शन

अर्जेण्टाइना में गोरस का कारबार अधिक नहीं है। एक एक रैंच (विशाल चरागाह) के स्वामी के पास हज़ारों गायें होती हैं। पर वह प्राय: बाहर से बन्द डब्बों में आये हुये दूध का प्रयोग करता है। वह गायों को कटवाने (मांस) के लिये पालता है। मक्खन का बहुत कम प्रयोग होता है। बहुत से पश्चिमी अर्जेण्टाइना में रैंच (विशाल चरागाह) १० हज़ार एकड़ से अधिक विस्तार के पाये जाते हैं। इनके स्वामी बड़े धनी हैं। यहां काम करने वाले मज़दूरों की दशा अच्छी नहीं है। मीलों चलने के बाद स्वामी का एक मंजिला विशाल भवन मिलता। लेकिन मज़दूरों के छोटे छोटे घर थोड़ी थोड़ी दूर पर बिखरे हुये हैं। यह घर कच्चे (मिट्टी) के बने होते हैं। इनमें दो तीन छोटी कोठरियां होती हैं। वे कभी छप्परों और कभी टीन की चद्दरों से छाये होते हैं। इन्हीं भद्दे घरों में इटली से आये हुये मज़दूर रहते हैं। इन इटेलियन मज़दूरों की संख्या इस देश में २० लाख से अधिक है। खेतों में काम करने वाले अधिकांश मज़दूर इटली वासी हैं।

ढोर चराने वाले अधिकतर मज़दूर ग्वाको या गाको हैं। यह वर्णसंकर हैं। इनमें स्पेनवासियों और मूल निवासी इण्डियनों का रुधिर मिला हुआ है। यह लोग घोड़ों और ढोरों को संभालने में बड़े चतुर होते हैं। पुराने समय के गाको लोग

बड़े लड़ाका थे। वे कमर में एक चौड़ी चाकू बांधे रहते थे। वे एक प्रकार का फन्दा (बोला) फेंककर मारते थे। आज कल के गाको लोग शान्त और दृढ़ मज़दूर हैं। वे ढोर चराने का काम करते हैं। खेतों में मज़दूरी का काम उन्होंने इटेलियन लोगों के लिये छोड़ रक्खा है। वे एक कमीज़ चौड़ा सोम्ब्रेरो और चौड़ा पाजामा पहनते हैं। पाजामा के निचले सिरों को वे अपने चुस्त जूतों में ठूंस लेते हैं। सरदी के समय वह पांचो या कम्बल पहन लेता है। इसके बीच में छेद होता है। इसी में वह अपना छेद डाल लेता है।

गाकी का प्रधान भोजन भुना हुआ मांस है। वह बिना चमड़ा निकाले हुये गाय या बैल को भून डालता है। गाको लोग पक्के घुड़सवार होते हैं। बचपन से वे घोड़ों की नंगी पीठ पर चढ़ना आरम्भ कर देते हैं। बड़े होने पर वे ज़ीन डाल कर चढ़ते हैं। इसमें चान्दी का काम रहता है। वह अपने पाँव को रकाब में डाल लेता है।

अर्जेण्टाइना के पश्चिमी मैदान (पम्पाज़) में बड़ी तेज आँधी चला करती है। इसे यहां पम्पेरो कहते हैं। यह आँधी इतनी तेज़ चलती है कि मालगाड़ी के भरे डब्बे उलट जाते हैं और सवारी गाड़ी के डब्बे पटरी से उड़ कर अलग गिर पड़ते हैं। पम्पेरो (आंधी) प्रायः सूखा पड़ने के बाद चला करती

है। पहले एक बादल प्रगट होता है। यह बादल ऐसा दिखाई देता है मानो ऊन की एक गेंद सुनहले ढांचा में रक्खी हो धूल के बादल इतने अधिक होते हैं कि मांस लेना कठिन हो जाता है। उड़ते हुये कण आंखों में भर जाते हैं। पहले बिजली चमक कर चका चौंध कर देती है। फिर वह बड़े जोर से कड़कड़ाती है। फिर मुसला धार वर्षा होती है। कभी कभी वर्षा के साथ साथ ओले गिरते हैं। वर्षा हो जाने पर धूप निकल आती है और हवा साफ़ हो जाती है। सब लोग भली भांति सांस ले सकते हैं।

पम्पा प्रदेश में २४ घंटे रेल यात्रा करने के बाद अर्जेण्टाइना की पश्चिमी सीमा समीप आ जाती है। इस लम्बी यात्रा में बहुत ही कम शहर या गांवों के दर्शन होते हैं। एण्डीज़ के पर्वतीय प्रदेश में जन संख्या और भी कम है। मीलों तक मनुष्य का कोई चिन्ह दिखाई नहीं देता है। कई घंटे मरुभूमि को पार करने में लग जाते हैं। यहां सूखी कटीली झाड़ियों को छोड़ कर और कोई बनस्पति नहीं उगती है। क्षितिज में अधिक दूरी पर एण्डीज पर्वत की चोटियां दिखाई देती हैं। मरुभूमि में कभी कभी अचानक मरुद्यान (नखलिस्तान) आ जाते हैं। यहां रेल की पटरी के दोनों ओर अंगूरों के बगीचे और

अर्जेन्टाइना-दर्शन

पोप्लार वृक्ष मीलों तक फैले हुये हैं। जहां तक दृष्टि जाती है यही मनोहर दृश्य सामने आता है। एण्डीज़ की तलहटी के समीप मेंडोज़ा नदी की घाटी के मध्य में मेंडोज़ा नगर बसा हुआ है। यह अर्जेण्टाइना का सब से अधिक पश्चिमी नगर है। मेंडोजा नदी एण्डीज की बरफ का पिघला हुआ पानी बहा लाती है। जहां तक यह नदी जाती है वहां तक यह मरुभूमि में जीवन डाल देती है। इसके पानी से मरुभूमि की १००० वर्ग मील भूमि सींची जाती है। सींची हुई भूमि अत्यन्त उपजाऊ है। यहां सभी प्रकार की फसलें उग सकती हैं। अंगूर की लताओं के लिये यह इतनी अनुकूल है कि पूरा जिला अंगूरों का बगीचा बन गया है। अंगूर की लतायें पंक्तियों में लगाई जाती हैं। कोई कोई पंक्ति आध मील लम्बी होती है। यह तारों पर चढ़ा दी जाती हैं। तार खम्भों में लगे रहते हैं। अंगूर गुच्छों में लगते हैं। कुछ अंगूर सफेद कुछ बैंजने होते हैं। पर यहां के सभी अंगूर अच्छे होते हैं। बहुत से अंगूरों से शराब बनाई जाती है। मेंडोजा जिले में शराब बनाने के हज़ारों कारखाने हैं। इनमें शराब बनाने की नये ढंग की मशीनें लगी हैं। बहुत से ताजे अंगूर ठंडी कोठरियों में भर कर ब्यूनाजायर्स के निवासियों के लिये भेज दिये जाते हैं। कुछ अंगूर यहां से बाहर भेजे जाते हैं। कुछ अंगूर पहाड़ी मार्ग से वाल्प-

रेजो पहुँचते हैं। फिर वे यहां से समुद्री मार्ग से बाहर पहुँचते हैं। न्यूयार्क इनका सबसे बड़ा ग्राहक है।

मेंडोजा नगर अमरीका के पुराने नगरों में है। यहां के घर एक मंजिला हैं। इनकी दीवारें बड़ी मोटी हैं। मोटी दीवारें भूकम्प से बचने के लिये बनाई गई हैं। १८६१ में यहां ऐसा भीषण भूकम्प आया कि शहर नष्ट हो गया और हजारों मनुष्य मर गये। पुराने नगर में एक भी घर सजा न बचा। पुराने नगर के खंडहरों से एक मील की दूरी पर वर्तमान नया मेंडोज बनाया गया।

मेंडोजा नगर के मध्यवर्ती भाग में सैन मार्टिन की चौड़ी सड़क है। इसके दोनों ओर पानी की छोटी नहर बहती है। यहां पांच बड़े बड़े प्लाजा या पार्क हैं। सबसे बड़ा धंसा हुआ प्लाजा सैन मार्टिन का प्लाजा है। शहर से दो मील की दूरी पर पहाड़ियों पर अर्जेण्टाइना के राष्ट्रीय नेता का स्मारक है। यहां पहाड़ को काट कर विशाल मूर्तियां बनाई गई हैं। यह मूर्तियां उस सेना की हैं जिसका सैन आधिपत्य मार्टिन ने अर्जेण्टाइना की स्वाधीनता के लिये अपने हाथ में लिया था।

सैन मार्टिन यूरुग्वे नदी के किनारे एक छोटे नगर में पैदा हुआ था। वह एक स्पेनवासी अफसर का लड़का था। उसने

स्पेन में सैनिक शिक्षा प्राप्त की थी। यहां उसने नेपोलियन की सेनाओं को स्पेन से बाहर भगाने में सहायता दी थी। १८१२ ई० में वह अपनी जन्मभूमि को लौटा। यहां लौटते ही वह तन, मन, धन से स्वाधीनता के युद्ध में भिड़ गया। सैन मार्टिन ने देखा कि अर्जेंण्टाइना देश तभी स्वाधीन रह सकता है जब स्पेनवासी पीरू और चिली से भगा दिया जावें। इस कार्य के लिये उसने मेंडोज़ा ज़िले में ४००० सैनिक एकत्रित किये। फिर उसने चिली पर चढ़ाई की। १८१७ ई० में इस छोटी सेना ने एण्डीज़ को पार करके चिली देश में प्रवेश किया। यहां उसने चिली देश से स्पेन की सेना को मार भगाया फिर उसने पीरू देश पर चढ़ाई करने की तयारी की। चिली में उसने तीन वर्ष जहाजों और नावों को बनवाने में लगाये। अन्त में जब बेड़ा तयार हो गया तब उसने पीरू के लिये प्रस्थान किया। जहाजों से उतर कर जैसे ही उसकी सेना पीरू देश को उतरी कि स्पेन की सेना बिना लड़े ही भागने लगी। पीरू देश ने अपनी स्वाधीनता घोषित की। इस प्रकार अर्जेण्टाइना, चिली और पीरू देश सैन मार्टिन को अपनी स्वाधीनता का पिता मानते हैं।

मेंडोज़ा के आगे छोटी पहाड़ी लाइन आरम्भ होती है। मेंडोज़ा के अंगूर और नाशपाती के बगीचे पीछे छूट जाते हैं।

मेंडाज़ा नदी ऐसी टेढ़ी चाल से बहती है कि यह कई बार पार करनी पड़ती है। इसी नदी की निकास की ओर रेलवे मार्ग ऊँचा चढ़ता जाता है। हिमाच्छादित चोटियां स्पष्ट दिखाई देती हैं। एकान्केगुआ की २३००० फुट ऊँची चोटी सबसे ऊपर उठी हुई है। अमरीका भर में यह सबसे ऊँचा पर्वत है। इसका पड़ोसी टुपुनगाटो पर्वत भी उत्तरी अमरीका के पर्वतों से अधिक ऊँचा है। मेंडोज़ा नगर से १०० मील पश्चिम की ओर चलने पर इन्का लोगों का पुल आ जाता है। यह संसार भर में अति प्राकृतिक पुल है। इन्का लोगों का मार्ग इसी ओर होकर जाता था इसी से पुल का यह नाम पड़ गया।

मेंडोज़ा नदी के ऊपर पुल की चौड़ाई १५० फुट है। चिली पर चढ़ाई करते समय सैन मार्टिन अपनी सेना इसी मार्ग से ले गया था। रेल बनने के पहले डाक इसी मार्ग से जाती थी। यात्री पैदल या घोड़े पर सवार होकर जाया करते थे। थोड़ी थोड़ी दूर पर गुम्बद वाले घर यात्रियों को आश्रय देने के लिये बने हुये हैं। रात्रि में ठहरने पर यहां यात्रियों से कोई किराया नहीं लिया जाता है। कभी कभी उन्हें ईंधन और भोजन भी यात्रियों के लिये यहां रख दिया जाता था। कुछ दूर आगे अर्जेण्टाइना की अन्तिम स्टेशन आ जाती है यहीं २ मील

लम्बे सुरंग का द्वार है। यहां से चिली पहुँचने के दो मार्ग हैं। रेल मार्ग सुरंग के भीतर से जाता है और यात्री को अधिक शीघ्र चिली में पहुँचा देता है। पर पर्वतों का मनोहर दृश्य देखने के लिये पहाड़ के ऊपर वाला मार्ग अधिक अच्छा है। यहां होकर घोड़ा गाड़ियां भी चला करती हैं। इनमें चार घोड़े जुता करते हैं। घोड़ा गाड़ी का मार्ग बड़ा टेढ़ा और सपाट है। सुरंग के भीतर रेल मार्ग केवल २ मील लम्बा है। पर ऊपर वाला घोड़ा गाड़ी का मार्ग ८ मील लम्बा है। सबसे ऊँचे भाग में दर्रा समुद्र तल से १३००० फुट ऊँचा है। वहां हवा अधिक और स्वच्छ है। सब कहीं बर्फीली चोटियां दिखाई देती हैं। सब कहीं उजाड़खंड है। हरियाली का नाम नहीं है। दर्रे की चोटी के पास पहुँचनें पर घोड़ा गाड़ियों की पंक्ति कुछ देर के लिये ठहर जाती है। सामने चिली और अर्जेंण्टाइना की ठीक सीमा पर एंडीज़ के यीशु की विशाल (२६ फुट ऊँची) मूर्ति है। मूर्ति के एक हाथ में क्रास (सलीब) है। दूसरा हाथ आशीर्वाद देने के लिये ऊँचा उठा हुआ है। यह स्मारक दोनों देशों के बीच स्थायी सन्धि का सूचक है। यह कांसे की मूर्ति दोनों देशों की पीतल की तोपों को गलाकर बनाई गई है। पहले अर्जेंण्टाइना और चिली के बीच में सीमा सम्बन्धी झगड़ा हुआ फिर यह शान्तिपूर्वक तय हो गया और दोनों देशों

ने भविष्य में शान्ति रखने के लिये यह स्मारक बनाकर अपने को बचन बद्ध कर लिया।

इस स्थान से पश्चिम की ओर ९० मील की दूरी पर प्रशान्त महासागर का तट है। आगे का मार्ग चिली देश में होकर गया है। चिली की राजधानी सेन्टियागो या बाल्परेज़ो बन्दरगाह के लिये मार्ग सीधा गया है। पर रेल का किराया इतना अधिक है कि बहुत सा माल इस समय भी गधों और खच्चरों पर लद कर चक्करदार प्राचीन इन्का मार्ग से जाता है।

पेटेगोनिया और मेजेलन प्रणाली

दक्षिणी अमरीका का वह भाग जो ४० दक्षिणी अक्षांश के दक्षिण में है बहुत समय तक अज्ञात रहा। किसी ने इस प्रदेश पर अधिकार करने का प्रयत्न नहीं किया। यह भाग प्रशान्त महासागर से अटलांटिक महासागर तक फैला हुआ है। अन्त में चिली और अर्जेण्टाइना ने इसे आपस में बांट लिया। एण्डीज़ पर्वत श्रेणी दोनों के बीच में सीमा बनी। इस प्राकृतिक सीमा से अर्जेण्टाइना को पेटेगोनिया का बहुत बड़ा भाग मिल गया।

१५२० ई० में फर्डीनेण्ड मेजेलन ने पेटेगोनिया का पता लगाया। कोलम्बस के समान वह भी भारतवर्ष की खोज में

अर्जेन्टाइना-दर्शन

पृथिवी की परिक्रमा करने के लिये निकला था। उसे आशा था कि दक्षिणी अमरीका के तट में कहीं ऐसा जल मार्ग मिलेगा जहां होकर वह भारतवर्ष में पहुँच सकेगा। वह पांच जहाजों का बेड़ा लेकर दक्षिणी अमरीका के पूर्वी तट पर दक्षिण की ओर बढ़ा। यहां वह महाद्वीप के दक्षिणी सिरे के समीप पहुँचा। यहां उसने एक स्थान का नाम पोर्ट सेन्ट जूलियन रक्खा। इसी ठंडे और वीरान स्थान पर उसे शीत काल बिताना पड़ा। पहले कुछ समय तक कोई मूल निवासी दिखाई नहीं दिये। बसन्त ऋतु के आने पर यहां बड़े बलवान और बड़े डील डौल वाले मूलनिवासी इण्डियन दिखाई देने लगे। इनके पांव विशेष रूप से अधिक बड़े थे। इसलिये मेजेलन ने उनका नाम पेटेगोआ (बड़े पैर वाले) रक्खा। पेटेगोआ शब्द का अर्थ है। बड़ा पैर। इसी से इनका देश पेटेगोनिया कहलाने लगा।

यदि हम ब्यूनाजायर्स से पेटेगोनिया के लिये प्रस्थान करें तो प्रथम ४०० मील तक हम रेलगाड़ी पर सवार होकर जा सकते हैं। रेलवे लाइन बाहियाब्लांका नगर तक गई है जो ब्यूनाजायर्स से ४०० मील दक्षिण की ओर स्थित है। अर्जेण्टाइना भर में बाहियाब्लांका सर्वोत्तम बन्दरगाह है। दक्षिणी भाग का यही प्रधान बन्दगाह है। यहां आटा पीसनेकी बड़ी बड़ी चक्कियां

हैं। यहीं गेहूँ बाहर भेजने के लिये बड़े बड़े एलीवेटर बने हुये हैं। यहां ऊन रखने की गोदाम संसार भर की बड़ी गोदामों में से एक है। यह नगर हाल में बड़ी तेज़ी से बढ़ा। इस समय इसकी जनसंख्या १ लाख से ऊपर है।

बाहियाब्लांका के आगे दक्षिणी भाग के लिये रेलवे लाइन नहीं है। इस ओर तटीय मैदान में स्टीमर द्वारा यात्रा करनी पड़ती है। इसी मार्ग से मेजेलन ने इस भाग में यात्रा की थी। तट के पड़ोस की भूमि नीची है। यहां पेड़ों का नाम नहीं है। यहाँ अच्छे बन्दरगाहों की कमी है। खाड़ियां भी कम हैं जहां जहाज़ तूफान में शरण ले सकें। केवल नदी के मुहानों पर छोटी छोटी बस्तियां मिलती हैं।

तटीय मैदान से पश्चिम की ओर बस्तियां कुछ अधिक हैं। यहीं घुमक्कड़ इण्डियन मिलते हैं। यह भू-भाग खेती के लिये अच्छा नहीं है। भेड़ों के चराने के लिये अधिक अनुकूल है। यहां भेड़ें वर्ष भर खुले मैदान में चर सकती हैं। आस्ट्रेलिया को छोड़कर संसार भर में सबसे अधिक भेड़ें यहीं पाली जाती हैं। भेड़ों के चरागाह यहां हज़ारों एकड़ के हैं। एक एक चरागाह में लाखों भेड़ें पाली जाती हैं। भेड़ों के झुन्ड दो दो हज़ार की टोलियों में बांटे जाते हैं। प्रति दो हज़ार भेड़ों की देख भाल

करने के लिये एक गड़रिया नियुक्त होता है। उसे सहायता देने के लिये कुछ कुली रहते हैं। प्रत्येक झुण्ड के लिये कई मील लम्बा और चौड़ा चरागाह होता है। इनमें ग्रीष्म कालीन और शीत-कालीन चरागाह अलग अलग होते हैं। शीत कालीन चरागाहों में भेड़ों को अति ठंडी हवाओं से बचाने का प्रबन्ध होता है। वे इतने अधिक ठंडे स्थानों में नहीं रक्खी जातीं जहां कई दिन तक बरफ पड़ी रहे और भेड़ों को घास न मिल सके। फिर भी प्रायः सभी चरागाहों में कठिन शीत काल में कुछ भेड़ें मर ही जाती हैं। जो भेड़ें सरदी की ऋतु में ठंड से इधर उधर मरी पड़ी रहती हैं इनका पता लगाने के लिये गड़रिये बसंत ऋतु में चक्कर लगाते हैं। वे इनकी लाशों से खाल उतार लाते हैं। बरफ में दबी हुई भेड़ों की खाल और ऊन ताजी कटी हुई भेड़ों के समान ही उपयोगी होती है।

पेटेगोनिया के इस भाग में सड़कों की कमी है। अच्छे चरागाह नदियों के समीप हैं। नावों द्वारा भेड़ों की ऊन जहाज तक पहुँचाई जाती है। जहाज पर बाहर से आया हुआ सामान भी नावों द्वारा ही चरागाहों तक आता है। भेड़ों के चरागाहों में सभी आवश्यक सामान बाहर से आता है। इसी से यहां के घर अच्छे नहीं होते हैं। प्रत्येक चरागाह की दूकान अलग होती

है। भेड़ों का बाड़ा भी अलग होता है। कांटेदार तार मीलों तक लगे होते हैं।

इस भाग में एक प्रकार का छोटा कीड़ा (जो पिसू या छोटा खटमल सा होता है) गड़रियों को बड़ा कष्ट देता है। यह भेड़ों के मांस में चिपक जाता है और कुछ ही समय में भेड़ को मार डालता है। इससे बचने के लिये भेड़ों को वर्ष में कई बार डुबकी लगवा कर इन्हें नहलाया जाता है। नहलाने के ताल इतने गहरे होते हैं कि भेड़ों को तैर कर एक किनारे से दूसरे किनारे तक जाना पड़ता है। ताल के सिरे पर एक मनुष्य लम्बी लकड़ी लेकर खड़ा रहता है। जैसे भेड़ तैरकर उसके पास आती है वह लकड़ी से दबा कर भेड़ को एक क्षण के लिये पानी में डुबो देता देता है जिससे भेड़ के शरीर का प्रत्येक अंग पानी में डूब जावे।

पेटेगोनिया के वर्तमान निवासी प्राचीन पेटेगोनियन लोगों की सन्तान हैं। वे इस समय भी घुमक्कड़ शिकारियों का जीवन व्यतीत करते हैं। वे गुआनाको का शिकार करते हैं। गुआनाको लामा के समान ऊँट की जाति का जंगली पशु होता है। इसे वे तीर कमान से मारते हैं। शुतुर्मुर्ग का शिकार वे बोलास से करते हैं। बोलास में कच्चे चमड़े की तीन पट्टियाँ होती हैं।

यह पट्टियां एक सिरे पर बंधी रहती हैं। दूसरे सिरे पर प्रत्येक पट्टी में छोटे पत्थर या लोहे के टुकड़े बंधे रहते हैं। पेटेगोनियन लोग ऐसी चतुरता से बोलास फेंकते हैं कि यह शुतुर्मुर्ग की टांगों में लिपट जाता है और शुतुर्मुर्ग भूमि पर गिर पड़ता है।

५० दक्षिणी अक्षांश पार करने पर अर्जेण्टाइना के दक्षिण-पूर्व की ओर फाकलैंड द्वीप समूह पड़ता है। यह द्वीप समूह ब्रिटेन के अधिकार में है। यहां के निवासी भेड़ पालते हैं और ह्वेल का शिकार करते हैं। कुछ आगे बढ़ने पर सेण्ट जूलियन बन्दरगाह पड़ता है जहां मेजेलन ने शीत काल बिताया था। अधिक आगे गेले गोस बन्दरगाह है। यहां सदा प्रबल पछुआ आंधी चला करती है। इसी से यह नाम पड़ा। इस आंधी को भी गेले गोस कहते हें। अन्त में वर्जिन अन्तरीप से आगे बढ़ने पर मेजेलन प्रणाली आ जाती है। २१ अक्टूबर १५२० ई० में साहसी मेजेलन ने इस प्रणाली को प्रथम वार पार किया था। यह प्रणाली २ मील से लेकर ५ मील तक चौड़ी और ३०० मील लम्बी है। मेजेलन के जहाजों के सामने प्रबल पछुआ हवा लगातार चलती रही इससे उसे इस प्रणाली को पार करने में १ महीना लग गया। अन्त में उसे बहुत ही शान्त सागर मिला। इसी से उसने इसका नाम प्रशान्त महासागर

रख दिया। मेजेलन प्रणाली के दक्षिण में टेराडेल फ़्यूगो द्वीप है। मेजेलन ने यहाँ यात्रा करते समय प्रायः जलती आग देखी थी। इसी से उसने इस द्वीप का नाम टेराडेल फ़्यूगो या आग का देश (अग्नि भूमि) रख दिया। वास्तव में यह आग यहां के निवासी तापने के लिये जलाते थे। इस द्वीप के दक्षिणी सिरे पर हार्न अन्तरीप है। यहां समुद्र खुला हुआ है। बहुत समय तक जहाज़ इसी मार्ग से अटलांटिक महासागर से प्रशान्त महासागर को जाते थे। इसी मार्ग से जाकर अँग्रेजों के लुटेरे जहाज़, स्पेन वालों के उपनिवेश को लूटा करते थे आजकल लम्बे हार्न अन्तरीप के मार्ग से जहाज़ बहुत कम जाते हैं। वे मेजेलन प्रणाली के छोटे जल मार्ग को अधिक पसन्द करते हैं। मेजेलन प्रणाली के दोनों ओर नीचे किनारे हैं। इन किनारों से मिला हुआ पानी उथला है। पानी की ओर किनारे क्रमशः ढालू हो गये हैं।

टेराडेल फ़्यूगो द्वीप बहुत बड़ा नहीं है। इसके अधिक बड़े भाग पर चिली देश का अधिकार है। दूसरा छोटा भाग अर्जेंएटाइना के अधिकार में है। उत्तर की ओर टेराडेल फ़्यूगो द्वीप की भूमि चपटी है और दक्षिणी पेटेगोनिया के समान है। पहाड़ द्वीप के केवल दक्षिणी भाग में मिलते हैं। द्वीप के बड़े

भाग में सदा हरे रहने वाले पेड़ उगते हैं बरफ के बीच में हरे पेड़ बड़े सुहावने लगते हैं। द्वीप के कुछ भागों में अच्छी घास उगती है। इससे यहां भेड़ें और गाय-बैल पाले जाते हैं। टेरा-डेल फ्यूगो के कुछ भागों में हिमागार मिलते हैं। आगे के देश (जैसा इसका नाम है) में हिमागारों का मिलना सचमुच आश्चर्यजनक है। इस द्वीप में ओना और यहगन जाति के इण्डियन बसे हुये हैं। पचास वर्ष पहले इन लोगों की संख्या ३००० से अधिक थी फिर यहां गोरे लोगों ने भेड़ों के लिये बड़े बड़े चरागाह स्थापित कर लिये। कुछ रेड इण्डियन लोगों ने कभी कभी चरागाहों से कुछ भेड़ें चुरा लीं। इस पर गोरों ने इन्हें गोली से उड़ाना आरम्भ कर दिया। आजकल इन अभागे इण्डियन लोगों की संख्या कुछ ही सौ शेष रह गई हैं। यह बचे हुये इण्डियन लोग द्वीप के दक्षिण में पहाड़ी और जङ्गली भाग में रहते हैं। पहले यह लोग एक दम नंगे रहते थे। शीतकाल में कड़ी ठंड से बचने के लिये वे अपने शरीर पर मछली की चर्बी लगा लिया करते थे। आजकल यह लोग गुआनाको की खाल ओढ़ लेते हैं। इनके छोटे छोटे निवास स्थान बड़े भद्दे होते हैं। वे प्रायः गुफाओं और झाड़ियों में रहते हैं। यह लोग मछली मार कर और गुआनाको का शिकार

करके जीवन निर्वाह करते हैं। इस द्वीप में कोई बड़ा नगर नहीं है। मेजेलन प्रणाली के उत्तर में दक्षिणी अमरीका के प्रधान स्थान पर पण्टाएरीनाज नगर है। संसार भर में यह दक्षिणी ध्रुव से निकटतम नगर है। यह चिली के अधिकार में है। बहुत समय तक पण्टाएरीनाज बन्दरगाह में ह्वेल का शिकार करने वाले जहाज़ ही आकर ठहरा करते थे। पर जब पेटेगोनिया और टेराडेल फ्यूगो में भेड़ पालने का काम आरम्भ हुआ तब भेड़ों के पालने वाले सैकड़ों मील से चलकर यहां आने लगे। वे जहाजों को अपनी ऊन बेंच जाते थे और आवश्यक सामान मोल ले जाते थे। इस प्रकार पण्टाएरीनाज ऊन के निर्यात का एक प्रधान बन्दरगाह बन गया।

कुछ वर्ष हुये बन्दरगाह से पीछे की ओर सोने का पता लगा। कई कम्पिनियां सोना निकालने में लग गईं। आजकल मेजेलन प्रणाली से गुजरने वाले प्रायः सभी जहाज़ कोयला और दूसरे आवश्यक सामान लेने के लिये पण्टाएरीनाज़ बन्दरगाह में ठहर जाया करते हैं। इसके सामने के द्वीप इसे तूफान से सुरक्षित रखते हैं। इस बन्दरगाह की जनसंख्या १५,०००है। इसमें अधिकांश जर्मन हैं। जब जहाज़ बन्दरगाह में प्रवेश करता है तब कई छोटी छोटी नावें जहाज़ के समीप आ जाती

हैं। इनमें ओना इण्डियन लोगों का पूरा परिवार रहता है। एक नाव में माता, पिता और पाँच छः बच्चे रहते हैं। यह लोग शराब नहीं पीते हैं। पर यह तम्बाकू बहुत पीते हैं। यह लोग बढ़िया समूर (गरम और मुलायम बाल लगी हुई खाल) देकर बदले में तम्बाकू मोल ले लेते हैं कभी कभी यह पहनी हुई खाल देकर भी तम्बाकू मोल ले लेते हैं। इस प्रकार जहाज़ वालों को थोड़ी सी तम्बाकू के बदले में मूल्यवान खालें मिल जाती हैं।

पण्टाएरीनाज़ से पश्चिम की ओर बढ़ने पर पोर्ट फेमिन (दुर्भिक्ष बन्दरगाह) पड़ता है। ३०० वर्ष पहले यहां एक छोटा सा उपनिवेश भूख से मर गया। फिर यहां दूसरा उपनिवेश बसाने का प्रयत्न नहीं किया गया। पश्चिम की ओर बढ़ने पर किनारा बहुत ऊंचा नीचा और मनोहर हो जाता है। यहां प्रणाली बहुत तंग और गहरी है। तट एक दम सपाट है। कोई कोई चोटियां ३००० फुट ऊँची हैं। टेराडेल फ़्यूगो की एक चोटी (माउंट सार्मीनेण्टो) ७००० फुट ऊँची है। यह तट से ४० मील दूर है। सीधी रेखा में मेजेलन प्रणाली की लम्बाई २५० मील है। पर वास्तव में ३५० मील चलने के बाद जहाज़ अटलांटिक महासागर से प्रशान्त महासागर में पहुँचता है।

संसार की किसी प्रणाली (जलसंयोजक) में इतने द्वीप और खाड़ियां नहीं हैं। जितनी इस मेजेलन प्रणाली में हैं। इस भाग में कभी अँग्रेज़ी राज्य नहीं रहा फिर भी यहां बहुत से अँग्रेज़ी नाम मिलते हैं इसका कारण यह है कि इस प्रदेश का नक़शा पहले पहल अंग्रेज़ जहाजी कप्तानों ने बनाया था

फैटलबे (दुर्घटना खाड़ी) फ्यूरी (प्रकोप) द्वीप आदि नाम वहां की दुर्घटनाओं को सूचित करते हैं। एक द्वीप पर चिली की सरकार ने जहाज़ों को दुर्घटनाओं से बचाने के लिये लाइट हाउस (प्रकाश भवन) बना दिया है। यह प्रकाश भवन २०० फुट ऊँचा है। इसका प्रकाश ३० मील की दूरी से दिखाई देता है। अन्त में जहाज केपिलर के पास पहुँच जाता है। यहां एक चट्टान के ऊपर दूसरी चट्टान इस प्रकार जमी हुई है कि यहां १५०० फुट ऊँचा स्तम्भ (पिलर) सा दिखाई देता है। मेजेलन ने इसका नाम केप डेसियाडो अभीष्ट अन्तरीप रक्खा। इसका कारण यह था कि यहां से उसको उस (प्रशान्त) महासागर के दर्शन हुये जहां वह पहुँचना चाहता था।

———

निवासी

अर्जेण्टाइना प्रजातन्त्र का क्षेत्रफल १०,१९,९६५ वर्गमील है जो भारतवर्ष के क्षेत्रफल के आधे से अधिक है। पर इस देश की जन संख्या केवल सवा करोड़ है। इस जन संख्या में ७७ प्रतिशत लोग वे योरूपीय हैं जो यहां पैदा हुये हैं। प्रायः २० प्रतिशत योरुप से आये हुये योरुपीय लोग हैं। ३ प्रतिशत वर्णसंकर हैं। यहां के प्राचीन मूल निवासी इण्डियन लोग प्रायः नष्ट हो चुके हैं। समस्त देश में इस समय इनकी संख्या केवल ५३००० शेष बची है। इनमें अधिकांश उत्तरी गरम जंगली प्रदेश में रहते हैं। कुछ पेटेगोनिया और टेराडेल फ्यूगो द्वीप में रहते हैं। जब यहां स्पेन का राज्य था तब अधिकतर योरुपीय स्पेन निवासी थे। आजकल यहां सबसे अधिक संख्या इटेलियन लोगों की है। यहां ४७ प्रतिशत इटेलियन, ३३ प्रतिशत स्पेन वासी, शेष २० प्रतिशत जन संख्या में यहां रहने दूसरी जातियां सम्मिलित हैं। हबशी लोगों की जन संख्या यहां बहुत ही कम हैं। यहां प्रति वर्ष प्रायः ४०,००० योरुपीय योरुप के भिन्न-भिन्न देशों से बसने के लिये आते हैं। वहां की सरकार उन्हें बुलाने के लिये तरह तरह की सुविधायें देती है। वह उन्हें काम देती है। कुछ समय तक उन्हें मुफ्त भोजन और निवास

स्थान देती है। उनका सामान सरकारी खर्च से पहुँचा देती है। वे विदेशों से अपने लिये बिना चुङ्गी दिये अपना सामान मँगा लेते हैं। रेलवे कम्पनियां भी इस काम में सहायता देती हैं। वे बिना लाभ के ही भूमि के छोटे छोटे भाग नवागन्तुकों को दे देती है। लागत मात्र मूल्य भी थोड़ा थोड़ा करके कई वर्षों में लेती है। दक्षिणी भाग में एण्डीज़ की घाटियों को बसाने के लिये यहां की सरकार ने डेन्मार्क, हालैंड, बेल्जियम, और स्विज़रलैंड से सन्धि कर ली है। इन देशों की कुछ फालतू जन संख्या यहां आकर बसेगी।

जन संख्या की दृष्टि से सबसे बड़ा नगर ब्यूनाज़ायर्स है। इसकी जनसंख्या बाहरी मुहल्लों को मिलाकर ३५ लाख है। रोज़ेरियो नगर की जन संख्या ५ लाख से ऊपर है। कार्डोबा की जन संख्या ढाई लाख और लाप्लाटा नगर की जन संख्या २ लाख है। सेन्टाफी और टुकूमान नगरों की जन संख्या सवा सवा लाख है। इनके अतिरिक्त अर्जेण्टाइना में २८ ऐसे छोटे छोटे नगर हैं जिनमें प्रत्येक की जन संख्या २५,००० से अधिक है। १८५७ से १९२४ तक इस देश में निम्न देशों के लोग आकर बस गये इटेलियन २६ लाख, स्पेन वासी १८ लाख, रूसी १,७०,०००, तुर्क १५७०००, जर्मन १ लाख, आस्ट्रिया हंगारी

वासी ९२,०००, अँग्रेज ६४०००, पुर्चगाली ३८०००, स्विस ३७०००, पोल (पोलैंड वासी) २५ ०००, वेल्जियन २४०००, डेन (डेनमार्क वासी) १३०००, यूगोस्लैव ९०००, उत्तरी अमरीकन ९०००, डच (हालैंडवासी) ९०००, स्वेड (स्वीडन वासी) ३०००, अन्य जातियां १२०,००० ।

शासन प्रबन्ध

अर्जेंएटाइना प्रजातन्त्र में १४ प्रान्त और १० प्रदेश (टेरीटरी) और एक संघीय जिला है। यहां की शासन प्रणाली संयुक्त राष्ट्र अमरीका के ढंग पर है। विधान (कानून) बनाने का काम कांग्रेस करती है। कांग्रेस में दो मंडल हैं। ऊपरी मंडल या सीनेट में ३० सदस्य होते हैं। प्रतिनिधि मंडल या चेम्बर आफ डिप्यूटीज़ १५८ सदस्य होते हैं। प्रत्येक प्रान्त और प्रदेश (टेरीटरी) सीनेट के लिये २ सदस्य भेजता है। २ सदस्य संघीय जिले से आते हैं। प्रति ३३००० जन संख्या के पीछे १ प्रतिनिधि प्रतिनिधि मंडल के लिये चुना जाता है। जो व्यक्ति ६ वर्ष तक राष्ट्र के नागरिक रह चुके हों उन्हीं में से सीनेटर हो सकते हैं। डिप्यूटीज़ चुने जाने के लिये ४ वर्ष की

नागरिकता होनी चाहिये। अपने भारतवर्ष में प्रायः सभी निवासी पुराने हैं और पीढ़ियों से बसे हुये हैं। पर अर्जेण्टाइना खाली देश है। इसे भरने के लिये प्रति वर्ष नये लोग आते रहते हैं। यह नये लोग नागरिक हो जाने पर देश में चार वर्ष निवास करने के पश्चात ही डिप्यूटी (प्रतिनिधि मंडल के सदस्य) चुने जा सकते हैं। सीनेटर ९ वर्ष के लिये चुने जाते हैं। इनका चुनाव धारा सभायें करती हैं। संघीय जिले में विशेष मत दाताओं का एक संघ होता है। प्रतिनिधियों का चुनाव सीधे जनता द्वारा होता है। दोनों धारा सभाओं का सम्मेलन देश की राजधानी ब्यूनाजायर्स में १ मई से ३० सितम्बर तक होता है।

राष्ट्रपति छः वर्ष के लिये चुना जाता है। वह अपनी अवधि पूरा करने के बाद एक दम दूसरी बार राष्ट्रपति नहीं हो सकता है। राष्ट्रपति होने के लिये यह आवश्यक है कि उसका जन्म इसी देश में हुआ हो और वह रोमन केथालिक मत का अनुयायी हो। राष्ट्रपति स्थल और जल सेना का प्रधान सेना-पति होता है। वह समस्त सेना और साधारण जनता के लिये सरकारी पदाधिकारी नियुक्त करता है। उपराष्ट्रपति भी इसी प्रकार चुना जाता है। वह सीनेट का प्रधान होता है। राष्ट्रपति

को शासन कार्य में सहायता देने के लिये ८ मन्त्री होते हैं। इन्हें वह स्वयं चुनता है। यह गृह मन्त्री, विदेश मन्त्री, पूजा मन्त्री कोष, न्याय और शिक्षा, युद्ध, जल सेना, कृषि और सार्वजनिक निर्माण विभाग के मन्त्री होते हैं। चुनाव में सभी वयस्क (बालिग) पुरुषों को मत देने का अधिकार है।

स्थानीय सरकार—प्रत्येक प्रान्त का शासन विधान अलग होता है। प्रत्येक प्रान्त अपना गवर्नर, व्यवस्थापिका सभा के सदस्य और प्रान्त के दूसरे पदाधिकारी चुनता है।

अर्जेण्टाइना की स्वाधीनता

१९१० ई० की २५ वीं मई को अर्जेण्टाइना देश ने अपनी स्वाधीनता का शताब्दी उत्सव बड़ी धूम धाम से मनाया। १८१० ई० तक यह एक पराधीन देश था। यहां २५० वर्ष तक स्पेन का राज्य रहा। पर स्पेन को सोना और चांदी अधिक प्रिय था। इसलिये स्पेन वालों ने अर्जेण्टाइना के कृषि और चरवाही के प्रदेशों की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया। सोने और चांदी का यहां एक दम अभाव था। उस समय के स्पेनवासी ब्यूनाज़ायर्स को संसार का सिरा समझते थे। यहां का व्यापार पनामा और पीरू के मार्ग से होता था। सभी सामान और यात्री एण्डीज़

की ऊँची श्रेणी को पार करके अर्जेंएटाइना में आते थे। इसका फल यह हुआ कि दक्षिणी ब्रेजील में पुर्चगाली लोग अवैध व्यापार करने लगे और स्पेन के पदाधिकारियों से छिप कर व्यापार का सामान ब्यूनाजायर्स के बन्दरगाह में पहुँचाने लगे। स्पेनवासी इतनी दूर आकर बसना बहुत कम पसन्द करते थे। उनकी बस्तियां दूसरी राजधानियों (लीमा, बोगोटा और सेन्टियागो) में अधिक बढ़ने लगीं।

अठारहवीं शताब्दी के अन्त में स्पेनवासियों ने ब्यूनाजायर्स का बन्दरगाह सब के लिये खोल दिया। अंग्रेज व्यापारी शीघ्र ही ब्यूनाजायर्स की स्थिति के व्यापारिक महत्व को ताड़ गये। उन्होंने समझ लिया कि ब्यूनाजायर्स दक्षिणी अमरीका के बहुत बड़े भाग का प्राकृतिक केन्द्र है जहां होकर इस बड़े भाग का व्यापारिक सामान आया जाया करेगा। स्पेनवासियों ने इस बन्दरगाह की रक्षा का भी ठीक ठीक प्रबन्ध नहीं किया। १८०६ ई० में अंग्रेजों की एक छोटी सेना ने ब्यूनाजायर्स पर अधिकार कर लिया। इस समाचार से लन्दन में बड़ी खुशी मनाई गई। पर कुछ ही समय में अंग्रेजों को बिना किसी शर्त के आत्मसमर्पण करना पड़ा। इसी समय नेपोलियन ने स्पेन पर चढ़ाई की। १८१० ई० में उसकी विजयी सेनाओं ने स्पेन

पर अपना प्रभुत्व जमा लिया। स्पेन का राजा फ्रांस की कठ-पुतली बन गया। अब स्पेन में इतनी शक्ति नहीं रही कि वह दक्षिणी अमरीका के अपने उपनिवेशों की रक्षा कर सके। १८१० की १८ मई को स्पेन की हार का समाचार ब्यूनाजायर्स के लोगों को ज्ञात हो गया। वे तुरन्त स्वाधीन होने का प्रयत्न करने लगे। उन्होंने स्पेन के कठपुतली राजा का विरोध करने का निश्चय कर लिया। २५ मई को स्पेन के राजा का प्रतिनिधि (वायसराय) इतना डर गया कि उसने अपना सब अधिकार जनता को सौंप दिया। जनता की भीड़ ने शासन करने के लिये वायसराय के स्थान पर एक समिति को नियुक्त किया। इस प्रकार अर्जेण्टाइना की स्वाधीनता का आरम्भ २५ मई १८१० ई० को हुआ।

जब ब्यूनाज्रायर्स स्वाधीन हो गया तो उसने दूसरे नगरों को बलपूर्वक स्वाधीन होने के लिये बाध्य किया। स्वाधीन अर्जेण्टाइना की सेनायें दक्षिणी बोलिविया में पहुँची। पर जब इस सेना ने सूखे पठार और ऊँचे पहाड़ को पार करके पीरू की की राजधानी लीमा पर चढ़ाई करने का निश्चय किया तो इसे पराजित होना पड़ा। मीलों तक सेना के लिये खाद्य सामग्री का अभाव था। इसके अतिरिक्त इस सेना में स्पेन के वंशज या वर्ण संकर थे। यहां के मूलनिवासियों के लिये "कोउ नृप होय हमें का हानी" की कहावत चरितार्थ होती थी। इन पीड़ित लोगों ने किसी का साथ न दिया। इन कठिनाइयों को सर्व प्रथम यहां के नेता सैन मार्टिन ने पहचाना।

देश दर्शन

सैन मार्टिन के माता, पिता स्पेनवासी थे। वह अर्जेण्टाइना और पेरेग्वे की सीमा के पास पैदा हुआ था। उसका पिता एक विश्वास पात्र सरकारी पदाधिकारी था। उसकी प्रारम्भिक शिक्षा स्पेन में हुई। कुछ समय के पश्चात् वह सेना में भरती हो गया। उसने अफ्रीका और स्पेन की लड़ाई में भारी योग दिया। जब उसने अर्जेण्टाइना के स्वातंत्र्य संग्राम का समाचार सुना तो वह १८१२ में स्पेन से अमरीका को लौट आया। यहां उसने देश भक्तों की एक सेना तयार की।

उच्च एण्डीज के मार्ग से पीरू देश में पहुँच कर स्पेन की शाही सेनाओं को हराना कठिन था। अतः उसने पश्चिमी अर्जेण्टाइना के मेनडोज़ा नगर में अपनी सेना का अड्डा बनाया। मेंडोज़ा से चिली में पहुँचने के लिये कई मार्ग थे। यहां वह २ वर्ष तक ठहरा और सैनिक तयारी करता रहा। यहां उसने मूलनिवासी इण्डियन लोगों को भी अपना मित्र बना लिया। १८१७ ई० में अस्पलाटा दर्रे से एण्डीज़ पर्वत को पार करके मेपो स्थान पर उसने स्पेन की सेना को बुरी तरह से हराया। इससे चिली देश स्पेन के चंगुल से मुक्त हो गया। फिर उसने लीमा पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार सैन मार्टिन ने न केवल अर्जेण्टाइना वरन् चिली और पीरू को भी स्वाधीन कर दिया। अन्त में उसने अपनी शिक्षित सेना बोलिविया के महारथी बोलिवार को सौंप दी जिससे दक्षिणी अमरीका के और भी कई देश स्वाधीन हो गये।
